श्री मुनिसुव्रतनाथ, विद्याप्राप्ति चौंसठ ऋद्धि एवं लघु गणधर वलय विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचयिता

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी
दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पुस्तक का नाम : श्री मुनिसुव्रत, विद्याप्राप्ति, चौंसठ ऋद्धि एवं
लघु गणधर वलय विधान

आशीर्वाद : गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
: वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार : दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

सहयोग : मुनि श्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी
ग. आर्यिका राजश्री माताजी, ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी
आर्यिका आस्थाश्री माताजी, क्षु. सुधर्मगुप्तजी,
क्षु. धर्मगुप्तजी, क्षु. श्रवणगुप्तजी, क्षु. विनयगुप्तजी
क्षु. धन्यश्री माताजी, क्षु. तीर्थश्री माताजी, ब्र. केशरबाई

सर्वाधिकार सुरक्षित : रचनाकाराधीन

प्रकाशन वर्ष : 2019

संस्करण : तृतीय-1000

प्रकाशक : श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
Email : dharamrajshree@gmail.com

प्राप्ति स्थान
1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ
2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332
3. श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288
4. श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770
5. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922
6. श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर
9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृ.नं.
1.	आशीर्वाद	ग.ग. कुन्थुसागर जी	4
2.	शुभ संदेश व मंगल कामनायें	आचार्य कनकनंदी जी	5
3.	आज की आवश्यकता	आचार्य गुप्तिनंदी जी	7
4.	भक्ति से भगवान	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	9
5.	श्री नित्यमह पूजा	ग.आर्यिका राजश्री माताजी	11
6.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा	आचार्य गुप्तिनंदी जी	15
7.	विधान मंडल		18
8.	ऋद्धि मंत्र		19
9.	श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान		20
10.	प्रशस्ति		30
11.	आरती		31
12.	श्री विद्याप्राप्ति विधान		33
13.	सरस्वती माता की आरती		55
14.	प्रशस्ति		58
15.	चौंसठ ऋद्धि विधान		59
16.	लघु गणधर वलय विधान		74
17.	प्रशस्ति		80
18.	गणधर भगवान की आरती		81

आशीर्वाद

बड़ी प्रशंसा की बात है कि आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी के द्वारा '' **श्री मुनिसुव्रतनाथ, विद्याप्राप्ति, चौंसठ ऋद्धि एवं लघु गणधर वलय विधान**'' लिखा गया। अब वह प्रकाशित होने जा रहा है। इस प्रकार की पूजा से समस्त ग्रहों की शांति होती है। आपने विधान लिखने में बहुत अच्छा प्रयत्न किया है। आपकी रचना बहुत सुन्दर है इसी प्रकार जिनवाणी की सेवा करते रहें ऐसी मैं मंगल कामना करता हूँ। समाज को ग्रहों की शांति के लिए यह विधान अवश्य करना चाहिए तथा लाभ उठाना चाहिए।

आशीर्वाद
गणाधिपति गणधराचार्य कुन्थुसागरजी
कुंथुगिरी

शुभ संदेश व मंगल कामनायें

(पूजा का स्वरूप व फल)

(चाल - यमुना किनारे...)

पूज्य पुरुषों की पूजा सदा ही करो।
पूज्य गुण स्मरण व कीर्तन करो॥
यथायोग्य पूज्य गुण ग्रहण करो।
सातिशय पुण्य से स्वर्ग-मोक्ष को वरो॥1॥

देव-शास्त्र-गुरु हैं पूज्य हमारे।
वीतरागी देव बनना लक्ष्य हमारे॥
लक्ष्य प्रतिपादक है शास्त्र हमारे।
लक्ष्य के साधक हैं गुरु हमारे॥2॥

तन-मन-वचन से पूजा विधेय।
कृत-कारित-अनुमत से यह विधेय॥
ख्याति-पूजा-लाभ परे पूजा विधेय।
श्रद्धा-भक्ति-शक्ति से यह विधेय॥3॥

पूजा से परिणाम को निर्मल/पावन करो।
सातिशय पुण्य बान्धो व पाप विनाशो॥
संकट-संक्लेश-संताप विनाश करो।
स्वर्ग-मोक्ष-सुख को पाया ही करो॥4॥

भाव सहित पूजा करते हैं श्रावक।
श्रमण होता मुख्यतः भाव पूजक॥
पूजा से पूज्य बनना है लक्ष्य सभी का।
आत्मोपलब्धि करना है लक्ष्य 'कनक' का॥5॥

गुप्तिनंदी शिष्य रचते विविध विधान।
उनके लिये प्रतिनमोऽस्तु है मम॥
सहायक प्रकाशक पूजक जनों को।
शुभाशीर्वाद मंगल कामना सभी को॥6॥

हर मनुष्य को पूज्य पुरुषों की पूजा करना चाहिये। हम पूजा में पूज्य पुरुषों के गुण स्मरण और उनका कीर्त्तन करते हैं। पूज्य पुरुषों से उनके गुण ग्रहण करते हैं। इस पूजा से सातिशय पुण्य का बंध होता है। यह पूजा स्वर्ग व परम्परा से मोक्ष दिलाती है। मन, वचन, काय और कृतकारित अनुमोदना से पूजा करना चाहिये। ख्याति लाभ मान–प्रतिष्ठा से दूर रहकर पूजा करना चाहिये। पूजा से अपने परिणाम निर्मल बनाना चाहिये, शुद्धि से की गई पूजा ही पाप को नष्ट करती है।

श्रावक द्रव्य सहित पूजा करता है और श्रमण भाव से पूजा करते हैं। पूजा से पूज्य बनना ही हमारा लक्ष्य है। ऐसे पवित्र भावना से हमारे प्रिय शिष्य आचार्य गुप्तिनंदी ने अनेक विधानों की रचना की है। उन विधानों में एक अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले '**श्री मुनिसुव्रतनाथ, विद्याप्राप्ति, चौंसठ ऋद्धि एवं लघु गणधर वलय विधान**' है। हमारे आचार्यों ने नवग्रह के विषय में अनेक ग्रंथों में बताया है। तत्त्वार्थ सूत्र के चौथे अध्याय में ज्योतिष देवों का वर्णन आया है। यह विधान करने वाले सभी भक्त आत्मोपलब्धि को प्राप्त करें। वही मेरा भी लक्ष्य है।

आचार्य गुप्तिनंदी को प्रति नमोऽस्तु। सहायक, पूजक, प्रकाशक सभी को शुभाशीर्वाद।

–आचार्य कनकनंदीजी

सागवाड़ा

आज की आवश्यकता

दोहा

सर्व जीव के दुःख हरें, मुनिसुव्रत जिनदेव।
जिन गुण सम्पत के लिए पूजें उन्हें सदैव।।

सम्यग्दृष्टि जीवों के लिए सभी तीर्थंकर आराध्य हैं, फिर भी नीति है ''**आर्त्त नरा धर्म परा भवन्ति**'' दुःखी मनुष्य अपने दुःखों से पीड़ित हो धर्मपरायण होते हैं। वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी काल के प्रभाव से अनेक प्रकार मिथ्या मत मतान्तर प्रचलित हैं।

नव ग्रहों के नाम पर भी झूठ का कालाबाजार धड़ल्ले से चल रहा है। मीडिया में अनेक बाबा शनि आदि ग्रहों का भय दिखाकर भोली जनता को झूठे कर्म काण्ड में फंसा रहे हैं। कतिपय जैन श्रावक भी मिथ्या मतों में भटक रहे हैं। उन सबको शनिग्रह की सभी प्रकार की बाधाओं से बचाने के लिए सभी समस्याओं का समाधान भी '**श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान**' हैं।

सम्पूर्ण भारत में श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के अनेक सिद्धक्षेत्र, तीर्थक्षेत्र व अतिशय क्षेत्र हैं। उनमें पैठन, केशवराय पाटन, मांगीतुंगी, किरठल, जहाजपुर, जयपुर, भानासहिवरा आदि–आदि अनेक तीर्थं हैं। उनमें पैठन एक ऐसा तीर्थ है। जहाँ मुनिसुव्रतनाथ भगवान की चतुर्थकालीन प्रतिमा हैं। प्राचीन किवदंती के अनुसार इसे खरदूषण राजा ने स्वयं गोदावरी की बालू से बनाया और रामचंद्र, लक्ष्मण आदि महापुरुषों ने महापूजा की। यहाँ की अनेक प्राचीन घटनायें व इतिहास हैं जो आश्चर्यकारी है। पैठन क्षेत्र जितना जैनों के लिए महत्वपूर्ण है उतना ही अजैनों में भी प्रसिद्ध है।

हर शनि अमावस्या को यहाँ विशेष महामस्तकाभिषेक महोत्सव होता है। जिसमें हजारो भक्त–यात्री एकत्रित होते हैं। 24 जून 2017 को शनि अमावस्या के महाभिषेक के निमित्त श्री मुनिसुव्रत दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कमेटी ने मुझे ससंघ पैठन आने का निमंत्रण दिया। साथ ही **'श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान'** की **सात दिवसीय संगीतमय कथा** का सर्वप्रथम आयोजन किया। इसके निमित्त से ही आर्यिका आस्थाश्री माताजी सहित संघ के निवेदन पर श्री धर्मतीर्थ क्षेत्र में प्रस्तुत **'श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान'** की रचना हुई है।

यह विधान प्रभु के अतिशय से 29 मई से 31 मई 2017 के बीच मात्र तीन दिनों में ही तैयार हो गया। ये प्रभु की ही कृपा है। हमारे दोनों गुरुओं का आशीर्वाद हमारे लिए सबसे बड़ा सम्बल है। उन्हें कोटि–कोटि नमोऽस्तु–3 । हमारे सभी कार्यों में हमारे पूरे संघ का, हमारे शिष्यों का बड़ा सहयोग है। उन सबको इस हेतु बहुत सारा आशीर्वाद। सभी को यथायोग्य..।

प्रस्तुत संस्करण में **श्री मुनिसुव्रतनाथ के साथ विद्याप्राप्ति, चौंसठ ऋद्धि एवं लघु गणधर वलय विधान** का एक साथ प्रकाशन किया गया है।

इस ग्रन्थ के प्रकासन में जिन दाताओं ने अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग किया है उन सभी भक्त परिवारों को हमारा भरपूर आशीर्वाद है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशक, मुद्रक, पूजक, पाठक, दर्शक, वाचक, सहयोगी, प्रचारक सभी को हमारा बहुत सारा आशीर्वाद।

–आचार्य गुप्तिनंदी

श्री धर्मतीर्थ

5–6–2017

भक्ति से भगवान

जिनेभक्ति-जिर्नेभक्ति-र्जिनेभक्ति-दिने-दिने।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु भवे-भवे।।

इस संसार में जो भगवान का सच्चा भक्त होगा वो ही भव-भव में भक्ति की कामना करेगा। पंचम काल में दुर्गतियों से, दुःखों से एकमात्र जिनेन्द्र भक्ति ही छुड़ा सकती है।

हम किसी भी रूप में प्रभु की भक्ति कर सकते हैं परन्तु मनुष्य का मन इतना चंचल है, वो अधिक समय तक एक ही विषय में नहीं लगता है। उसे वश में करने के लिए जिनशासन में भक्ति करने के भी कई साधन बताये हैं। अभिषेक, पूजा, पाठ, स्तोत्र, स्तुति, भजन, कीर्त्तन, विधान, मंत्र, जाप आदि।

हमारे आचार्यों ने कहा है- जो जीव आगे तीर्थंकर जैसे महापद को पाने वाला है वो भव्य प्राणी भी पूर्व के अनेक भवों में भगवान की विशेष भक्ति करता है। अपने घर से हर प्रकार की शुद्ध सामग्री तैयार करके मंदिर में लेकर जाता है। स्वयं भगवान की एक बार नहीं त्रिकाल पूजा विधान, अभिषेक करता है। त्रिकाल यानि तीनों कालों में भक्ति करता है।

आज हर जीव नवग्रह की बाधा से पीड़ित है। उन नवग्रहों में भी सबसे अधिक दुःखी व्यक्ति शनिग्रह की बाधा वाले मिलेंगे। जिसको शनिग्रह की साढ़े साती, ढैय्या पनोती लगी है। उन्हें मिथ्यात्व में भटकने की आवश्यकता नहीं है। हमारे 24 तीर्थंकरों में 20वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत भगवान हैं। आप उनका विधान, मंत्र, जाप, चालीसा पढ़कर अपने ग्रह को अनुकूल बना सकते हैं।

आज लोगों को कम समय में अधिक पुण्य कमाने का अवसर मिल जाये, कम समय में पूजा विधान हो जाये, इस बात का ध्यान रखते हुये हमारे आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव ने ये छोटे-छोटे '**श्री मुनिसुव्रत, विद्याप्राप्ति, चौंसठ ऋद्धि एवं लघु गणधर वलय विधान**' लिखे हैं। आचार्य भगवन महाकवि हैं। उन्होंने इन विधानों के पूर्व भी अनेक छोटे-बड़े विधानों की रचना की है। कई विधानों का उन्होंने संपादन किया है। ये सभी विधान हर दिन व्यक्ति अकेले ही 15-20 मिनट में आराम से कर सकता है।

आचार्यश्री बचपन से ही कविता, भजन आदि लिखा करते हैं। उनकी लेखनी चलती रही और पूजन एवं विधान की रचना प्रारम्भ हुई। इस तरह शब्दों का, छंद मात्रा का आदि ध्यान रखते हुये आपने सरल शब्दों में ऐसी रचना की जिसे हर व्यक्ति समझ सके तथा आज भी उनके अनुसार हमेशा कुछ-न-कुछ लिखते रहते हैं।

आचार्यश्री बड़े ही सरल स्वभावी हैं, ज्ञानी, विद्वान, बहु प्रतिभाओं के धनी, वात्सल्यमूर्ति, सभी जीवों के कष्ट मिटाने वाले हैं। उनके पास में आने वाले भक्त कभी निराश होकर नहीं जाते हैं। जिन गुरु भक्तों ने जब भी गुरुदेव से बच्चों के लिये व अपने कार्यों के लिये आशीर्वाद माँगा है। उनको आशीर्वाद में गुरुदेव ने प्रभु भक्ति का मार्ग बताया है। गुरुदेव स्वयं भी भक्ति करते हैं और अपने भक्तों को भी भक्ति का ही मार्ग बताते हैं। उनके द्वारा लिखे सभी विधान सभी के कष्ट मिटायें और गुरुदेव की यश-कीर्ति दिग्दिगांत में फैले इसी भावना के साथ गुरुदेव को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु, नमोऽस्तु।

विधानकर्त्ता, पूजक, पाठक, प्रकाशक सभी को शुभाशीर्वाद।

इति मंगलम् !

- आर्यिका आस्थाश्री

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज- हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन-माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म-जरा-मृत हरता हूँ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा- काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय-जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर-नार।।

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ।।
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ।।1।।

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ।।
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि-सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले।।2।।

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत-शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन।।
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन।।3।।

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता।।

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा वृषभदेव जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल के चन्दा को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वन्दन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना॥
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा, हम दुःख मिटायें आपना॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें॥
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे॥ जिन शासन...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये॥ जिन शासन...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजे निज मन्मथ नशे॥ जिन शासन...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ायें नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकायें माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर केला आदि फल ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनायें भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : चौबिस जिन के चरण में, मिलती शांति अपार।
शांतिधार देकर करें, पुष्पाञ्जलि सुखकार।।

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र : ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये॥1॥
सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे॥2॥
पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता॥3॥
विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें॥4॥
कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते॥5॥
नमि को नमे सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे॥6॥
चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये॥7॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

जिनभक्त निर्मल भाव से, 'चौबीस जिन' पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो, सुर-नर उसे वन्दन करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्ण कर, भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान मंडल

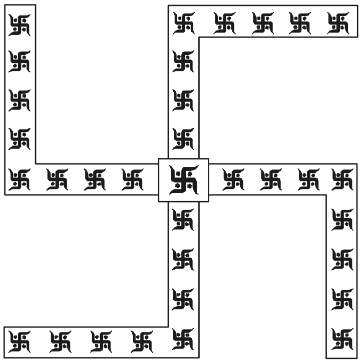

कुल 32 अर्घ

श्री सरस्वती विधान मण्डल

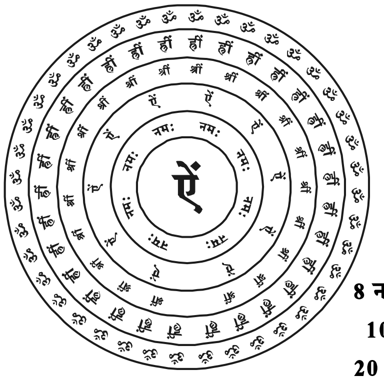

8 नमः
10 ऐं
20 श्रीं
30 ह्रीं
41 ॐ
कुल 109 अर्घ

गणधर वलय माण्डला

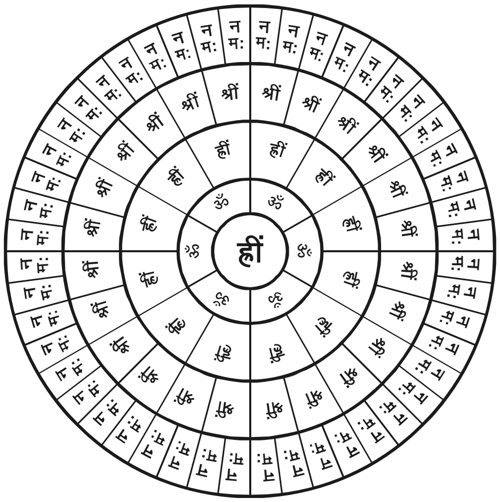

यह मण्डल 5 कोष्ठक का बनता है। प्रत्येक कोष्ठक में निम्न प्रकार अर्घ चढ़ाये जाते हैं :ह्न

प्रथम कोष्ठक में **'ह्रीं'** बीजाक्षर। द्वितीय कोष्ठक में **'ॐ'** (6), तृतीय कोष्ठक में 'ह्रीं' (12), चतुर्थ कोष्ठक में 'श्रीं' (24) व पंचम कोष्ठक में 'नमः' (48) **कुल योग= 90**

गणधर वलय मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6.णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14, णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30.णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47.णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

(शंभु छन्द)

जय-जय मुनिसुव्रत तीर्थंकर, हम नित्य तुम्हारे गुण गायें।
प्रभु पूजा में पुष्पांजलि हित, हम कमल पुष्प भी ले आये॥
जिन तीर्थों व चैत्यालय में, हैं नाथ ! तुम्हारी प्रतिमायें।
उनका आह्वान विधान करें, अपने सब संकट विनशायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(आँचली बद्ध चौपाई छंद)

निर्मल जल प्रभु चरण चढ़ाय, जन्म जरामृत रोग नशाय।
महानंद होय, जय जगबन्धु महानंद होय॥
जय-जय मुनिसुव्रत भगवान, कर दो हम सबका उत्थान।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस केशर चंदन कर्पूर, प्रभु पद में अर्पें भरपूर।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुवर्णी ले अक्षत पुंज, पूजें जिनवर के पद कुंज।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल मालती ले कचनार, अर्चें प्रभु पद जग सुखकार।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन शुद्ध बनाय, अर्चें प्रभु को क्षुधा नशाय।
महानंद होय, जय जगबन्धु महानंद होय॥
जय-जय मुनिसुव्रत भगवान, कर दो हम सबका उत्थान।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर मणि दीप सजाय, मोह-तिमिर हर भक्ति रचाय।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ दशांग सुगंधित धूप, पूजें निशदिन जिनपद भूप।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला आदि बहुत फल सार, अर्चे जिनपद मंगलकार।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्यों से अर्घ बनाय, पद अनर्घ हित जिनपद ध्याय।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ (अथ प्रत्येक अर्घ)

दोहा- मुनिसुव्रत जिनदेव का, करते भव्य विधान।
मंडल पर पुष्पांजलि, करें चन्देवा तान॥

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा- बाधा विघ्न विरोध संग, धीमे हो गर काम।
शीघ्र कार्य की सिद्धी हित, लो मुनिसुव्रत नाम॥

मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥1॥

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न विरोध विलंब आदि दोष निवारण समर्थाय शीघ्र कार्य सिद्धप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक शिक्षा में अगर, आते विघ्न अपार।
मुनिसुव्रत की अर्चना, हरती कष्ट हजार॥ मुनिसुव्रत..॥2॥

ॐ ह्रीं विद्या बुद्धि प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बार-बार पढ़कर अगर, रहे न कुछ भी याद।
मुनिसुव्रत का ध्यान कर, मिले ज्ञान का स्वाद॥ मुनिसुव्रत..॥3॥

ॐ ह्रीं स्मृति प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शिक्षा उच्च पद, पाना चाहो आप।
श्रद्धा से विधिवत करो, मुनिसुव्रत का जाप॥ मुनिसुव्रत..॥4॥

ॐ ह्रीं उच्चशिक्षा उच्चपद प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आई पी एस आदिक सभी, उच्च पदों का मान।
जिनभक्ति गुरु विनय से, मिलता सब सम्मान॥ मुनिसुव्रत..॥5॥

ॐ ह्रीं उच्च राजपद प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोजगार ना हो अगर, नहीं चले व्यापार।
प्रभु के जाप विधान से, चले सफल व्यापार॥ मुनिसुव्रत..॥6॥

ॐ ह्रीं व्यापार वृद्धि उपद्रव रहिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातु के व्यापार सब, या जमीन निर्माण।
बिन माँगे जिन भक्ति से, सब में हो उत्थान।।
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व व्यापार सिद्धीकरण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च सफल व्यापार या, सफल बड़े उद्योग।
मुनिसुव्रत के हवन से, मिले सफल सब योग।। मुनिसुव्रत..।।8।।

ॐ ह्रीं महाव्यापार सिद्धीकराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बार-बार घाटा लगे, कर्जा बढ़ता जाय।
मुनिसुव्रत का नाम व्रत, अंतराय विनशाय।। मुनिसुव्रत..।।9।।

ॐ ह्रीं धनहानि सर्व कर्ज आदि दोष निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिर से लेकर पैर तक, तन में हो बहु रोग।
औषधि प्रभु के नाम की, हरती सारे रोग।। मुनिसुव्रत..।।10।।

ॐ ह्रीं आपाद शीर्ष[1] सर्वरोग निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिर के रोग अनेक विध, या हो पक्षाघात[2]।
मुनिसुव्रत आराधना, हरें कर्म की घात।। मुनिसुव्रत..।।11।।

ॐ ह्रीं सिरशूल पक्षाघात आदि सर्वरोग निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्तचाप बढ़ने लगे, या फिर घटता जाय।
नाम महौषधि आपकी, सबको लय में लाय।। मुनिसुव्रत..।।12।।

ॐ ह्रीं रक्तचाप आदि सर्व रोग विनाशन समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. सिर मस्तिष्क, 2. लकवा।

मधुमेह के रोग से, तन नित गलता जाय।
नाम मंत्र के जाप से, देह व्याधि मिट जाय॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥13॥

ॐ ह्रीं मधुमेह आदि सर्वरोग विनाशन समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैंसर किडनी हृदय के, प्राणान्तक बहु रोग।
मुनिसुव्रत की अर्चना, जीते मृत्यु योग॥ मुनिसुव्रत..॥14॥

ॐ ह्रीं कैंसर किडनी हृदयादि प्राणांतक रोग विनाशन समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध ज्वर के जोर से, थर-थर काँपे देह।
हे जिन ! तेरे भक्त की, बने निरोगी देह॥ मुनिसुव्रत..॥15॥

ॐ ह्रीं सर्व ज्वरादि रोग निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाहन दुर्घटना घटे या, पैरों में चोट।
मुनिसुव्रत के ध्यान से, मिटे कर्म की खोट॥ मुनिसुव्रत..॥16॥

ॐ ह्रीं आकस्मिक दुर्घटना आदि सर्वरोग पीड़ा निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन कारण शत्रु बढ़े, बढ़े अकारण वैर।
श्री विधान जिनदेव का, हरे जगत का वैर॥ मुनिसुव्रत..॥17॥

ॐ ह्रीं बंधुत्वोपद्रव जिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झगड़े कोर्ट विवाद से, बचना चाहो भव्य।
पाप छोड़ प्रभु को भजो, पूजा कर लो भव्य॥ मुनिसुव्रत..॥18॥

ॐ ह्रीं राजभय कानूनी वाद-विवाद आदि सर्वदोष निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरते या चोटे लगें, या हड्डी हो भंग।
इन सब दुःख के नाश हित, प्रभु को भजो अभंग॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥19॥

ॐ ह्रीं अस्थि भंग आदि सर्व दुर्घटना निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिषेण नृप ने किया, प्रभु का श्रेष्ठ विधान।
चक्री सुख पा श्रमण बन, पाया स्वर्ग प्रधान॥ मुनिसुव्रत..॥20॥

ॐ ह्रीं हरिषेण चक्री पूजिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लखन राम बलभद्र ने, कर मुनिसुव्रत ध्यान।
दुर्जय रावण जीतकर, पायी विजय महान॥ मुनिसुव्रत..॥21॥

ॐ ह्रीं रामलक्ष्मण पूजिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता ने ध्याया तुम्हें, बची सती की लाज।
अग्नि शीतल जल बनी, मिला स्वर्ग साम्राज्य॥ मुनिसुव्रत..॥22॥

ॐ ह्रीं सीता सती पूजिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यसन मुक्त जीवन बने, कर जिनवर गुणगान।
श्रावक व्रत उत्तम पले, होवे अन्त महान॥ मुनिसुव्रत..॥23॥

ॐ ह्रीं व्यसन मुक्त श्रावक सद्व्रत बुद्धिकरण प्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आप पर जो करे, पंचामृत अभिषेक।
उसका मेरु शिखर पर, आगे हो अभिषेक॥ मुनिसुव्रत..॥24॥

ॐ ह्रीं मेरु शिखरे स्नानयुक्तपदप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. सर्वार्थ सिद्धी

मुनिसुव्रत की भक्ति से, बने भव्य निर्ग्रन्थ।
उत्तम संयम पालकर, करे कर्म का अन्त।।
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान।।25।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रंथ पद प्रदान समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तेरे साधक बने, जग प्रसिद्ध आचार्य।
गणधरादि पद प्राप्त कर, बने सिद्ध अनिवार्य।। मुनिसुव्रत..।।26।।

ॐ ह्रीं गणधरादि सूरिपद प्रदान समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारण भावना, भाते प्रभु के दास।
श्रेष्ठ समाधि साधते, कभी न होय उदास।। मुनिसुव्रत..।।27।।

ॐ ह्रीं षोडशकारण भावना साधनबलप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर पद श्रेष्ठ पा, वरें पंच कल्याण।
दिव्य देशना से करें, त्रिभुवन का कल्याण।। मुनिसुव्रत..।।28।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याण विभूतिप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! तुम्हारे ध्यान से, मन में हो आनंद।
कर्म कटे जिनभक्ति से, होता परमानंद।। मुनिसुव्रत..।।29।।

ॐ ह्रीं मनोनंदकरण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन अगोचर गुण अमल, गाकर वचनानंद।
जो पाये उसके कटे, सकल कर्म के फन्द।। मुनिसुव्रत..।।30।।

ॐ ह्रीं वचनानंदकरण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृदय कमल तुमको बिठा, होता कायानंद।
जीवन नित सुखमय बने, मिटे जगत का द्वन्द॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥31॥

ॐ ह्रीं कायानंदकरण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु राजे जिन तीर्थ पर, अतिशय वहाँ अपार।
उन तीर्थों पर नित रहे, भक्तों की भरमार॥ मुनिसुव्रत..॥32॥

ॐ ह्रीं सर्व तीर्थ जिनालय विराजित अतिशयकारी श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मुनिसुव्रत जिनवर का हम सब, श्रेष्ठ विधान रचायें।
बत्तीस कोठों का बहुवर्णी, मंडल श्रेष्ठ बनायें॥
लड्डू श्रीफल दीप पुष्प संग, आठों द्रव्य चढ़ायें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ्य चढ़ा हम, जिनगुण वैभव पायें॥

ॐ ह्रीं शनि आदि नवग्रह अरिष्ट निवारक, सर्व डाकिनी-शाकिनी, भूत-प्रेत, परकृत अनिष्ट मंत्र-यंत्र-तंत्र पीड़ा निवारक, धन-धान्य, पुत्र वंशवृद्धि कारक, ज्वरादि सर्व रोग निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **नीलमणिमय कुंभ से, करता हूँ त्रय धार।**
नील-कृष्ण बहु पुष्प की, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र - (1) ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः। (2) ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व सौख्यं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **मुनिसुव्रत तीर्थेश की, सुखदायी जयमाल।**
माला ले हम सब पढ़ें, पायें जिनगुण माल॥

(शंभु छंद)

जय-जय मुनिसुव्रत तीर्थंकर, हम उनकी जयमाला गायें।
जिनवर का महा विधान रचा, अपनी सब बाधा विनशायें।।
प्रभु ने भव-भव में श्रावक व्रत, व मुनि का व्रत अपनाया था।
भव तीन पूर्व चंपापुर का, प्रभुवर ने शासन पाया था।।1।।

हरिवर्मा राजा बन उनने, जिनवर का नित अभिषेक किया।
मंदिर मूर्ति निर्माण किये, मुनियों को नित आहार दिया।।
कई गुरुकुल व औषध शाला, भोजन शालायें बनवाईं।
हर तरह प्रजा की उन्नति हित, कई नियम नीतियाँ बनवाईं।।2।।

इक दिन मुनिनाथ अनंतवीर्य, चंपापुर नगरी में आये।
उनके दर्शन करने राजा, परिवार प्रजा के संग जाये।।
वो भव्यात्मा गुरु वाणी सुन, तत्क्षण मुनिव्रत को अपनाये।
वे द्वादशांग का अध्ययन कर, चारित्र विशुद्धि को पायें।।3।।

श्री सोलह दिव्य भावना भा, तीर्थंकर प्रकृति को बाँधें।
फिर अंत समय को निकट जान, वे श्रेष्ठ समाधि आराधें।।
फिर प्राणतेन्द्र बनकर प्रभु ने, स्वर्गों में पुण्य कमाया था।
अब मगध देश में राजगृही, उसका पुण्योदय आया था।।4।।

हरिवंश शिरोमणि सुमित्र नृप, सोमा रानी का भाग्य जगा।
उनके उर में जिनवर आये, सब जीवों का मिथ्यात्व भगा।।
श्रावण वदि द्वितीया श्रवण ऋक्ष, प्रभु गर्भागम से धन्य हुए।
वैशाख कृष्ण दशमी मंगल, तप जन्म तिथि बन धन्य हुए।।5।।

वैशाख कृष्ण नवमी के दिन, जिनवर को केवलज्ञान हुआ।
फाल्गुन कृष्णा बारस के दिन, फिर उनका मोक्ष प्रयाण हुआ।।

हे नाथ ! तुम्हें जो ध्याता है, वो शनिग्रह रिष्ट मिटाता है।
तव नाम जाप और पूजन से, सब दुःख संकट टल जाता है॥6॥

जो तव मूर्ति निर्माण करें, तू उसका नित उत्थान करे।
जो मन्दिर बनवाये तेरा, वो निश्चय मुक्ति प्रयाण करे॥
जो मंगल द्रव्य चढ़ाता है, वो नित नव मंगल पाता है॥
जो प्रातिहार्य अर्पण करता, वो धन सुख संपत् पाता है॥7॥

जो विधिवत हवन विधान करे, प्रभु तू उसका कल्याण करे।
जो नित चालीसा जाप करे, तू उनके सारे पाप हरे॥
हम सदा तुम्हारा ध्यान करे, औ तव चारित्र पुराण पढ़े।
'गुप्तिनंदी' प्रभु गुण गाकर, शिवपुर पथ पर अविराम बढ़े॥8॥

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न, बाधा, रोग, संकट, पीड़ा, उपद्रव निवारक, वाहनादि सर्व दुर्घटना, अपमृत्यु निवारक, सर्वविद्या सिद्धीप्रदायक, सर्वधन-धान्य, ऐश्वर्य, आरोग्य आयु वृद्धिकारक अतिशयकारी श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

जय-जय मुनिसुव्रत प्रभो, हम नित्य ध्यायें आपको।
त्रय रत्न पा हम आप सम, जीते सभी दुःख ताप को॥
संसार सागर पार कर, सम्पूर्ण कर्मों को नशें।
त्रय 'गुप्ति' मुनिव्रत साधकर, लोकाग्र में शाश्वत बसें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

(अडिल्ल छंद)

इच्छा पूरक आदीश्वर की वंदना।
धर्मतीर्थ नायक शांति जिन ! वंदना॥
चिंतामणि पारस बाबा की वंदना।
शासन नायक वीर प्रभु की वंदना॥1॥

चौबीसों जिनवर को नित वन्दन करूँ।
पाँचों परमेष्ठी को शत वन्दन करूँ॥
चौदह सौ बावन गणधर को नित नमूँ।
जिनवाणी माता को मैं नित-नित नमूँ॥2॥

अन्तर्मन में मुनिसुव्रत का नाम धर।
परम्पराचार्यों को पुनः प्रणाम कर॥
परदादा[1] व दादा[2] गुरु को नित नमन।
दीक्षा[3]-शिक्षा[4] दाता गुरु को नित नमन॥3॥

द्वय गुरुओं की कृपा बड़ी मन भावनी।
गुरु कृपा से कई विधान रचना बनी॥
मुनि दीक्षा के सत्ताइसवे वर्ष में
मुनिसुव्रत विधान रचा अति हर्ष है॥4॥

पंचम युग में शनि के रिष्ट विशेष हैं।
उनके हर्त्ता मुनिसुव्रत तीर्थेश हैं॥
मुनिसुव्रत जिनवर का श्रेष्ठ विधान है।
तीन[5] दिनों में रचा प्रभु के ध्यान से॥5॥

---

1. आचार्य श्री आदिसागरजी, 2. आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी, 3. गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी, 4. वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी, 5. दिनांक 29 मई से 31 मई 2017

जिन तीर्थों में मुनिसुव्रत भगवान हो।
जिन मंदिर गृह चैत्यालय अभिराम हो॥
सभी जगह यह सुन्दर श्रेष्ठ विधान हो॥
इसके आराधक सबका उत्थान हो॥6॥

दोहा- जब तक रवि-शशि लोक में, तब तक रहे विधान।
गुप्तिनंदी की भूल को, शोध पढ़े विद्वान॥

मुनिसुव्रत भगवान की आरती नं. 1

(तर्ज : चंदा तू लारे.....)

भक्ति से थाली लेकर, घृत के शुभ दीप सजाकर।
हम सब उतारे तेरी आरती,
रे बाबा झुक झुक उतारे तेरी आरती॥

सुमित्र नृपजी के लाड़ले, और सोमा जननी जाये-2
राजगृही में जन्म हुआ था, सब जग में सुख छाये-2
सोमा माता के नन्दन, मुनिसुव्रत जगवंदन॥ मन से...

रिश्ते-नाते छोड़े जिनवर, जग से मन घबराया-2
राग द्वेष सब छोड़ दिया और, आतम ध्यान लगाया-2
जिनवर तुम केवलज्ञानी, तीर्थंकर आतम ध्यानी॥ मन से...

सीता सती का कष्ट मिटाया, राम को पार लगाया-2
मानी दम्भी तार दिये सब, मुक्ति पथ बतलाया-2
'गुप्ति' हो तुम सम ज्ञानी, बने शुद्धातम ध्यानी॥ मन से...

***

आरती नं. 2

रचनाकार : आर्यिका आस्थाश्री माताजी

(तर्ज : माईन-माईन....)

तीर्थंकर मुनिसुव्रत जिन की, आरती हम सब गायें।
जगदुःखहर्त्ता, सबसुखकर्त्ता, जिनवर को हम ध्यायें।। बोलो मुनिसुव्रत की जय....

राजगृही में जन्मे स्वामी, सोमा सुत मनहारे।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, मुनि बन सबको तारे।।
गिरी सम्मेद शिखर से भगवन-2, मोक्ष महल को पायें।
जगदुःखहर्त्ता....... बोलो मुनिसुव्रत......।।1।।

जिन भक्तों ने मुनिसुव्रत को, अपने हृदय बसाया।
प्रभुवर ने भी उन भक्तों का, बेड़ा पार लगाया।।
हम भी भक्त तुम्हारे भगवन-2, द्वार तिहारे आये।
जगदुःखहर्त्ता....... बोलो मुनिसुव्रत......।।2।।

मुनिसुव्रत के जिनमंदिर में, जगमग ज्योति जलती।
शनिग्रह आदि की बाधायें, इस विधान से टलती।।
दीप जलाकर मंत्र जपें हम-2, फेरी नित्य लगायें।
जगदुःखहर्त्ता....... बोलो मुनिसुव्रत......।।3।।

झाँझर ढ़पली ढोल बाँसुरी, ताल मृदंग बजायें।
गरबा घूमर नृत्य रचाकर, अतिशय पुण्य कमायें।।
तेरे चरणों में हम आये-2, कीर्त्तन पाठ रचायें।
जगदुःखहर्त्ता....... बोलो मुनिसुव्रत......।।4।।

मुनिसुव्रत भगवन के तीरथ, सारे अतिशय वाले।
प्रभु चरणों की भक्ति करने, आते भक्त निराले।।
त्रय गुप्ति से तुम सम बनने-2, 'आस्था' शीश झुकाये।
जगदुःखहर्त्ता....... बोलो मुनिसुव्रत......।।5।।

***

श्री विद्याप्राप्ति सरस्वती विधान पूजन

(गीता छन्द)

हे भारती हंसासनी, वागीश्वरि माँ शारदा।
सुंदर अनेकों नाम से, जग पूज्य श्रुतदेवी सदा।।
अरिहंत मुख वासिनी हमें, अरिहंत रूप दिलाइये।
इस पुत्र के मन हंस पर, हंसासनी बस जाइये।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनी अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनी अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनी अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

नरसिंह की माता के लिए झारी सिंहमुखी।
झारी से जल चढ़ा के हम रहे सदा सुखी।।
पावन घड़ी सरस्वती विधान की बड़ी।
माँ शारदे घुमादे हम पे जादू की छड़ी।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो जलम् निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

चंदन के बहाने जो चरण मात के छुए।
हम भक्त ओत-प्रोत मातृभक्ति से हुए।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मोरासनी के सिर पे दिव्य मोर मुकुट है।
अक्षत स्वरूप हम चढ़ायें रत्न मुकुट ये।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो अक्षातान् निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

चंपा की बिछुड़ी व चमेली की पैजनी।
पहना के तुझे भावना सद्भावना बनी।।
पावन घड़ी सरस्वती विधान की बड़ी।
माँ शारदे घुमादे हम पे जादू की छड़ी।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

माँ हमको खिला द्वादशांग की मिठाईयाँ।
हम आपको चढ़ा रहे द्वादश मिठाईयाँ।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

हम रत्न से सरस्वती की मूर्ति बनायें।
फिर रत्न दीप से महान आरती गायें।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

मंडल विधान का बना बिठायें आपको।
घट धूप के सजा चढ़ायें धूप आपको।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

शिवफल प्रदायिनी को फल अनेक चढ़ायें।
सुन-सुन के उससे लोरी मोह नींद भगायें।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो फलम् निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

हे वाग्वादिनी तू हमें वाक्यसिद्धी दे।
हम अर्घ चढ़ायें तू हमें आत्मसिद्धी दे।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

सुंदर सुवर्ण रत्नमयी वस्त्र आभरण।
पहना के तुझे हमको मिले श्रेष्ठ आचरण।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

विधान प्रारंभ

अथ शत नामाष्टक अर्घ्य

दोहा- जिनवाणी माता तेरा, करते भव्य विधान।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करें, पाने ज्ञान निधान।।

अथ मण्डलस्योऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शंभु छन्द)

1. श्री आदि ब्रह्म मुख से निकली, जिन दिव्य ध्वनि श्रुत प्रभावली।
गणधर मुख कुण्ड विराज रही, नय रंग तरंगों से उछली।।
हे ज्ञान निधी माँ सरस्वती, सब जीवों का अज्ञान हरो।
हम करें अर्चना अर्घ लिए, हमको सद्ज्ञान प्रदान करो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिब्रह्ममुखाम्भोज प्रभवायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

2. हे मात ! आपका अंग-अंग, द्वादश अंगों से शोभित है।
मस्तक पर जिन प्रतिमा शोभे, जो करे जगत को लोभित है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्वादशांगिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

3. हे अम्ब ! आपकी वीणा में, सब भाषा की स्वर लहरी है।
हर शब्द छन्द प्रगटे तुममें, जिनकी अनुभूति गहरी है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वभाषायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

4. माँ ! तुम 'वाणी' तुममें वाणी, भव्यों को शिवसुख दानी है।
शरणागत हर भवि प्राणी को जिनवाणी जग कल्याणी है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वाण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

5. जो सार वस्तु दिलवाती है, तो मात 'शारदा' कहलाती।
हम छोड़ जगत निःसार विषय, पाये तुमसे अमृत पाती।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शारदायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

6. हे सरस्वती ! तेरा सुन्दर 'गिर', नाम सभी को भाता है।
अज्ञान गिरी का भेदन कर, गिरते को सदा उठाता है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

7. माँ सरस्वती ! दो ज्ञानमति, हम सरसमती को प्रगटायें।
जिसमें रस हो श्रुत अमृत का, वह अमृत का घट[1] प्रगटायें।।
हे ज्ञान निधी माँ सरस्वती, सब जीवों का अज्ञान हरो।
हम करें अर्चना अर्घ लिए, हमको सद्ज्ञान प्रदान करो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सरस्वत्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

8. जो जिनवर ब्रह्मा से प्रगटी, चैतन्य ब्रह्म में वास करें।
वो ब्राह्मी माता कहलायें, मम आत्म ब्रह्म में वास करें।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्राह्मयै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

9. हर वाक्य काव्य वा स्वर व्यंजन, बीजाक्षर की जो माता है।
'वाक्देवी' कहलाये जग में, मन उनको शीश झुकाता है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वाग्देवतायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

10. शरणागत को अविनश्वर सुख, देवे जो सच्ची 'देवी' है।
विद्याधन दात्री[2] देवी माँ, हम भी तेरे पद सेवी हैं।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देव्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

11. तू सब जीवों की भर्त्री[3] माँ, श्री मात 'भारती' कहलाती।
भारत की भाग्य विधाता हो, किस्मत भक्तों की चमकाती।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भारत्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

12. श्री जिनमुखवासी जगदम्बा, तू 'श्री निवासिनी' कहलाये।
जिसके उर तेरा वास रहे, वो श्रीपति जग में बन जाये।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ''श्री''निवासिन्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

13. हर अंग-अंग वा अंग पूर्व, माँ आप रूप में खूब सजे।
'आचार सूत्र' द्वय पाद लगे, जिसमें स्वरमय पाजेब[4] बजे।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आचार सूत्र कृतपादायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

---

1. घड़ा, 2. देने वाली, 3. भरण-पोषण करने वाली, 4. पायल।

14. ठाणांग और समवाय अंग, माँ तेरी सुदृढ़ जंघायें।
जिसको लखकर भवि जीवों की, मिट जाती मिथ्या शंकायें।।
हे ज्ञान निधी माँ सरस्वती, सब जीवों का अज्ञान हरो।
हम करें अर्चना अर्घ लिए, हमको सद्ज्ञान प्रदान करो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थानांग समवायांगजंघायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

15. व्याख्या प्रज्ञप्ति ज्ञातृधर्म, कथांग अंग तुम मनहर है।
शुचि गूढ़ अंग मैया तेरा, सन्मार्ग दिवाकर भ्रमहर है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्याख्या प्रज्ञप्ति-ज्ञातृ-धर्मकथांग चारूरूभासुरायै नम: अर्घ्यं नि...।।15।।

16. तुम उदर उपासक अंग बना, जो श्रावक धर्म बताता है।
यह श्रमणों की चर्या अतिशय, दृष्टांत सहित समझाता है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उपासकांग सन्मध्यायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

17. नाभि है अंतकृद्दशांग, जो अनहद नाद सुनाती है।
चैतन्य चमत्कारों के स्वर, गहराई से गुंजाती है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अंतकृद्दशांग नाभिकायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

18. आनुत्तरोपपादिक दशांग और प्रश्न व्याकरण अंग महा।
कुच कलश युग्म मनहारी है, जिससे ज्ञानामृत क्षीर बहा।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनुत्तरोपत्तिदशप्रश्नव्याकरणस्तन्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

19. है श्री विपाक सूत्रांग श्रेष्ठ, वक्षस्थल मैया मनहारी।
कर्मों के फल को दिखलाये, संकट में दे समता भारी।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विपाकसूत्र सद्वक्षसे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

20. श्री दृष्टि प्रवाद अंग अम्बा, तुम अंक विशाल कहाता है।
जिसमें आ हर भूला भटका, शुचि सम्यक्दर्शन पाता है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दृष्टिवादांग अंकधरायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

21. परिकर्म सूत्र विपुलांस कंठ, जिससे शोभे तू जगदम्बा।
मैं पाऊँ मुक्ति सूत्र श्रेष्ठ, तुम शरणा में आके अम्बा।।
हे ज्ञान निधी माँ सरस्वती, सब जीवों का अज्ञान हरो।
हम करें अर्चना अर्घ लिए, हमको सद्ज्ञान प्रदान करो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परिकर्म महासूत्रविपुलांस विराजितायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

22. दो प्रज्ञप्ति शशि दिनकर की, तुम बाहुलता कहलाती है।
शशि रवि के सर्व रहस्य बता, मुक्ति का पता बताती है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रमार्तंड प्रज्ञप्ति भास्वद्बाहुसुबल्लयै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

23. बहु द्वीप व सागर प्रज्ञप्ति, 'कर' श्रेष्ठ तुम्हारे कहलाये।
सब द्वीप सिंधु का ज्ञान करा, श्री मोक्ष द्वीप तक ले जाये।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपसागर प्रज्ञप्ति सत्करायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

24. व्याख्या प्रज्ञप्ति की शाखा, कर अंगुलि मैया तेरी है।
जिसकी पाँचों ही शाखाऐं, मेटे भव-भव की फेरी है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति विभ्राजत्पंचशाखा मनोहरायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

25. प्रथमानुयोग तुम वदन मात, मानो जग का मुख मण्डल है।
सब महापुरुष की कथा कहे, दर्पणवत अतिशय निर्मल है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वानुयोगवदनायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

(नरेन्द्र छन्द)

26. चौदह पूर्वों में पूरबगत, आर्या तेरा चिबुक बना।
तत्व अर्थ प्रगटाने वाला, वो ही श्रुत का सबक बना।।
विद्यादेवी मोक्षदायिनी, कामरूपिणी जग मैया।
तुमको ध्यायें भक्ति रचायें, पार करो भव से नैया।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वाख्यचिबुकांचितायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

27. श्री उत्पाद पूर्व हे गौरी !, नाक तुम्हारी सुन्दर है।
जग की सुन्दरता की मानो, तू ही मात समुन्दर है।।
विद्यादेवी मोक्षदायिनी, कामरूपिणी जग मैया।
तुमको ध्यायें भक्ति रचायें, पार करो भव से नैया।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्पादपूर्व सन्नासायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

28. अग्रायणी पूर्व हे श्रुत्यै, दंतावली बन दमक रही।
मानो उससे जैनागम की, कोटि रश्मियाँ चमक रही।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्रायणीयदंतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

29. मैया ! तेरे अधर मनोहर, जिन पर शुभ संवाद रहे।
इक वीर्यानुप्रवाद और इक, अस्ति नास्ति प्रवाद कहे।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीर्यानुप्रवाद-अस्तिनास्ति प्रवादोष्ठायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

30. ज्ञान प्रवाद कपोल तुम्हारे, वृत्ताकार अनुपम है।
केवलज्ञान दिलाने वाले, बीजभूत श्रुत उत्तम है।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञान प्रवाद कपोलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

31. रसना सत्य प्रवाद तुम्हारी, सत्य सुधारस स्वादी है।
हित मित प्रिय वचनामृत दो माँ, हम भी इसके आदी हैं।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्यप्रवादरसनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

32. आत्मप्रवाद महा हनु तेरा, आत्म तत्व दर्शाता है।
जिस पर श्रद्धा कर हर प्राणी, परमातम बन जाता है।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आत्मप्रवाद महाहनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

33. तालु कर्म प्रवाद कहाये, चाल कर्म की समझाये।
ताल ठोक जो भिड़े कर्म से, उनकी जय माँ करवाये।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कर्मप्रवाद सत्तालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

34. प्रत्याख्यान प्रवाद मात का, श्रेष्ठ ललाट कहाता है।
त्याग मार्ग दिखला भव्यों का, उच्च ललाट कराता है।।
विद्यादेवी मोक्षदायिनी, कामरूपिणी जग मैया।
तुमको ध्यायें भक्ति रचायें, पार करो भव से नैया।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रत्याख्यानललाट्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

35. श्री विद्यानुप्रवादपूर्व, कल्याण नाम द्वय लोचन हैं।
जैन धर्म का अतिशय दर्शा, करते कर्म विमोचन हैं।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विद्यानुवाद–कल्याण नाम धेय सुलोचनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

36. प्राणावाय पूर्व है मैया, तेरी भृकुटी ज्ञान कुटी।
क्रिया विशाल बनी अति सुन्दर, माँ तेरी दूजी भृकुटी।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राणावाय क्रिया विशाल पूर्व भ्रूधनुर्लतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

37. लोक बिंदु सारांश चूलिका, श्रवण श्रेष्ठ कहलाते हैं।
शरणागत भव्यों को हितकर, अमृत श्रवण कराते हैं।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकबिंदु महासार चूलिका श्रवणद्वयायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

38. पाँच चूलिका में थलगत ही, तन में उत्तम शीर्ष अहा।
उसको पूजूँ चित्त बसाऊँ, पाऊँ मुक्ति शीर्ष महा।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थलगाख्यलसच्छीर्षायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

39. नीर गता की चंचल लहरें, केश राशि कहलाती है।
चंचल मन को निश्चल करती, जग का बोध कराती है।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जलगाख्यमहाकचायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

40. मायागता मात की माया, शुचि लावण्य समाया है।
हर उपमा से उत्तम अम्बा, तुझको शीश झुकाया है।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मायागतसुलावण्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

41. रूपगता शुभ रूप आपका, रूपातीत बनाता है।
आप रूप ध्या हर भव्यातम, सिद्ध रूप को पाता है।।
विद्यादेवी मोक्षदायिनी, कामरूपिणी जग मैया।
तुमको ध्यायें भक्ति रचायें, पार करो भव से नैया।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रूपगाख्यसुरूपिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

42. गगन गता सौंदर्य कहाये, त्रिभुवन पूजित पावन है।
शुद्ध आत्म सौंदर्य दिलाये, वाग्मी तू मन भावन है।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आकाशगत सौंदर्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

43. मोर तुम्हारा सुन्दर वाहन, दिव्य ध्वनि सुन नृत्य करें।
पीछी दे निर्ग्रन्थ श्रमण को, श्रावक को कृत-कृत्य करे।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलापि सुवाहनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

44. नय निश्चय व्यवहार निराले, नुपूर गुंजते जीवन में।
नुपूर नाद आल्हाद दिलाये, सम्यग्ज्ञान जगे मन में।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निश्चयव्यहारदृङ्नूपुरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

45. बोध आपकी महामेखला, आतम शोध कराती है।
अधोगमन से हमें बचाकर, ऊर्ध्व गमन करवाती है।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं बोधमेखलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

46. सम्यक् चारित शील हार है, यह श्रृंगार निराला है।
मोक्षमुकुट दिलवाये निश्चय, जग इसका मतवाला है।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्रशीलहारायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

47. ज्ञान ज्योति से उज्ज्वल मैया, महोज्ज्वला श्रुतपाणी है।
मोह तिमिर को दूर भगाये, उज्ज्वल श्री जिनवाणी है।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महोज्ज्वलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

48. नैगम नय बन शोभा पाते, मात ! आपके बाजुबन्द।
जिस नैगम नय पे श्रद्धा रख, भविजन पाते परमानन्द॥
विद्यादेवी मोक्षदायिनी, कामरूपिणी जग मैया।
तुमको ध्यायें भक्ति रचायें, पार करो भव से नैया॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नैगमामोघकेयूरायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

49. संग्रह नय की सुन्दर चोली, माँ तेरी हमजोली है।
रत्नत्रय की गूढ़ मन्जूषा, तुमने ही माँ ! खोली है॥ विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संग्रहानघचोलकायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

50. नय व्यवहार कटक माँ तेरा, तत्व भेद दिखलाता है।
तन चेतन का भेद दिखाकर, केवलज्ञान दिलाता है॥ विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्यवहारोद्घकटकायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

51. ऋजुसूत्र नय कंकण अहा, तुम हाथ की शोभा बना।
जिसकी प्रभा ऋजु मन करे, मैं भा रहा यह भावना॥
माँ भारती ! भव तारती, वागिश्वरी हे शारदे !।
सद्ज्ञान का वरदान दे, विद्या निधी माँ तारदे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋजुसूत्रसुकंकणायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

52. माँ शब्द नय के पाश से, तुमने हरा भव पाश को।
हर लो मेरा भव त्रास भी, माँ तार दो इस दास को॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शब्दोज्ज्वलमहापाशायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

53. नय समभिरूढ़ महान तव, अंकुश करांगुलि में रहे।
जिससे तुम्हारे भक्त के वसु कर्म पे अंकुश रहे॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री समभिरूढ़ महांकुशायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

54. मुद्रा सु एवंभूत नय, तुम हाथ में शोभे सदा।
जिसकी प्रभा से भीत है, वसु कर्म वैरी सर्वदा॥
माँ भारती ! भव तारती, वागिश्वरी हे शारदे !।
सद्ज्ञान का वरदान दे, विद्या निधी माँ तारदे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री एवंभूतसन्मुद्रायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

55. दश धर्म का अम्बर महा, जिससे झलकती तन प्रभा।
हमको मिले वैसा वसन, जिससे बढ़े चेतन विभा॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दशधर्ममहाम्बरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

56. जपमाल है इक हाथ में, जो मोक्ष की वरमाल है।
जिसने जपा इस माल को, वो सिद्ध मालामाल है॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जपमालालसद्हस्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

57. पुस्तक रहे इक हाथ में, जिसमें भरा सर्वार्थ है।
उसके लिये मैं पूजता, बस ज्ञान पाना स्वार्थ है॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुस्तकांकितसत्करायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

58. माँ आपके कर्णाभरण नय और श्रेष्ठ प्रमाण हैं।
नय व प्रमाणों से कसा, शुचि ज्ञान सम्यग्ज्ञान है॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नयप्रमाणताटंकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

59. प्रत्यक्ष और परोक्ष युग्म, प्रमाण की है कर्णिका।
उनसे सजा मम चित्त हो, हे विश्वरूपा ! वर्णिका॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रमाणद्वयकर्णिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

60. कैवल्य ज्ञान महान है, शोभे मुकुट बन शीश पे।
वैसा मुकुट मुझको मिले, माहेश्वरी आशीष दे॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री केवलज्ञानमुकुटायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

61. धर शुक्ल ध्यान महानतम, सुन्दर तिलक मनभावना।
जिसने धरा इस ध्यान को, जग का तिलक वह नर बना॥
माँ भारती ! भव तारती, वागिश्वरी हे शारदे !।
सद्ज्ञान का वरदान दे, विद्या निधी माँ तारदे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुक्लध्यान विशेषकायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

62. जीवन्त अक्षर प्राण तुम स्यात्कार चिन्ह अमोघ है।
एकान्त तम को दूर कर हरता जगत व्यामोह है॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्यात्कारप्राणजीवन्त्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

63. उपदेय चित् संभाषिणी, भाषित सुमंगल दायिनी।
मम चित्त को मंगल करो, हे मात ! मोक्ष प्रदायिनी॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिदुपादेयभाषिण्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

64. जिनमत अनेकांतात्ममय, आनंद है माँ आपमें।
आनंद पद्मासन बना, हंसासनी जिस पर रमें॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनेकांतात्मकानंदपद्मासन निवासिन्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

65. सित सप्तभंगी छत्र तुम, हे मात ! वीणा वादिनी।
वीणा सुनाये सप्त स्वर, माँ सप्त भंग प्रवादिनी॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सप्तभंगीसितच्छत्रायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

66. नय षट्क की दीपावली आलोक करती लोक में।
सब जीव को शिव सुख मिले, तुम ज्ञान के आलोक में॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नयषट्कप्रदीपिकायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

67. द्रव्यार्थ नय का है चंवर, औ संग पर्यायार्थ नय।
हमको करो माँ नय कुशल, करबद्ध है इतनी विनय॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्रव्यार्थिक नयानूनपर्यायार्थिक चामरायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

68. कैवल्य कामिनी शिव सखी, पूरी करो मम कामना।
कैवल्य रवि का हो उदय, मिट जाये मिथ्यातम घना॥
माँ भारती ! भव तारती, वागिश्वरी हे शारदे !।
सद्ज्ञान का वरदान दे, विद्या निधी माँ तारदे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कैवल्यकामिन्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

69. तू ज्योतिमय दृग ज्योतिमय, मम आत्म ज्योति को जला।
माँ ज्योति प्रज्ञा की जला, अज्ञान तम जड़ से भगा॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्योतिर्मय्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

70. सम्पूर्ण वांग्मय रूपिणी, सत् ज्ञान गहनों से सजी।
तुम द्वार पे हे सुन्दरी, अध्यात्म शहनाई बजी॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वाङ्मयरूपिण्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

71. अविरुद्ध पूर्वापर तु ही, त्रयलोक में अति शुद्ध है।
जिस पर रहे तेरी कृपा, वो मूर्ख होता बुद्ध है॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वापराविरुद्धायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

72. गजगामिनी गीर्वाणश्री गौ मात तू जग व्यापिनी।
हर जीव पे तेरी कृपा, होवे जगत् सुख दायिनी॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गवे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

73. श्रुत बीज केवलज्ञान का, हे अम्ब ! तुमसे ही मिले।
अतएव तू श्रुत मात है, मुनिनाथ कहते हैं भले॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रुत्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

74. तुम देव की अधिदेव हो, त्रय लोक की श्रुत देव हो।
तुम नाम माला जो जपे, विद्यापति स्वयमेव हो॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवाधिदेवतायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

75. तुमसे सदा मंगल रहे, त्रैलोक्य मंगल कारिणी।
मम सब अमंगल दूर हो, सर्वार्थ मंगल दायिनी॥
माँ भारती ! भव तारती, वागिश्वरी हे शारदे !।
सद्ज्ञान का वरदान दे, विद्या निधी माँ तारदे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिलोकमंगलायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छन्द)

76. तुम भव्य की शरण्य, मात भक्त वत्सला।
तुम ज्ञान सुधा हेतु, भक्त भक्ति से चला॥
हे मात ! हमें आज, ज्ञान घुट्टी पिला दे।
भवजाल से इस, लाल को तू छुट्टी दिला दे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भवशरण्यायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

77. सर्वज्ञ मुख निवासिनी, तू सर्व वंदिता।
भविजीव को बताये, मात मोक्ष का पता॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्ववंदितायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

78. हे बोध मूर्ति मात !, हमको पूर्ण बोध दो।
संसार शोध छोड़, श्रेष्ठ आत्म शोध हो॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बोधमूर्तये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

79. माँ शब्द मूर्ति शब्द अब्धि के भी पार हो।
मम शब्द छन्द भक्ति, काव्य में निखार हो॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शब्दमूर्तये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

80. तू एक चिदानंद रूपिणी महेश्वरी।
निज आत्म चिदानंद हेतु अर्चनाकरी॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिदानंदैक रूपिण्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

81. हर प्राणि के हृदय की, आज एक वाणी है।
संसार पार तारती, माँ जैन वाणी है।।
हे मात ! हमें आज, ज्ञान घुट्टी पिला दे।
भवजाल से इस, लाल को तु छुट्टी दिला दे।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनवाण्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

82. 'वरदा' हमें सद्ज्ञान का वरदान दो सदा।
दुष्कर्म नाश मुक्ति शर्म, प्राप्त हो मुदा।। हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वरदायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

83. 'नित्या' तुम्हारे द्वार नृत्य अप्सरा करे।
पाने को सत्य तथ्य नित्य अर्चना करे।। हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नित्यायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

84. तुम भुक्ति मुक्ति फल प्रदात्री दान मूर्ति हो।
माँ तुम ही दान चिंतामणि कृपा मूर्ति हो।। हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भुक्तिमुक्ति फलप्रदायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

85. 'वागीश्वरी' तू ईश्वरी है, वाग् मंत्र की।
माँ तू ही सिद्धी दात्री, सर्व यंत्र-तंत्र की।। हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वागीश्वर्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

86. हे 'विश्वरूपा' ज्ञान गात्र, विश्वव्यापिनी।
पुरुषार्थ सिद्धी आप करें, कामरूपिणी।। हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वरूपायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

87. हर शब्द ब्रह्म रूप, आत्म ब्रह्म जगाये।
माँ शब्द ब्रह्म रूपिणी, ये राज बताये।। हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शब्दब्रह्मस्वरूपिण्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

88. शुभ भावना जगा रही, तू माँ 'शुभंकरी'।
मम अशुभ भावना हरो, दो पुण्यमंजरी॥
हे मात ! हमें आज, ज्ञान घुट्टी पिला दे।
भवजाल से इस, लाल को तु छुट्टी दिला दे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुभंकर्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

89. सब जीव का हित, सोचती मैया 'हितंकरी'।
हमने भी आज आत्म हित, की भावना करी॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हितंकर्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

90. जो धर्म अर्थ काम, मोक्षश्री को दिलाये।
वो 'श्रीकरी' माता ही, आत्म श्रेय दिलाये॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीकर्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

91. मम सर्व विषम भाव हरो अम्ब 'शंकरी' !।
प्रशमादि भाव लाभ हेत प्रार्थना करी॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शंकर्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

92. 'सत्या' तू ही सत्यार्थ, रूप को प्रकाशती।
भव्यात्म के असत्य आदि अघ निवारती॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

93. माँ तू क्षयंकरी है, सर्व पाप क्षय करे।
अज्ञान असुर जीत, आत्म को अभय करे॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वपापक्षयंकर्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

94. शिव मार्ग पे चलाये, मात तू 'शिवंकरी'।
शिववास हेतु भक्ति, सहित वंदनाकरी॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिवंकर्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

95. हर भव्य को तू ईश, बनाये 'महेश्वरी'।
तू सर्व इन्द्र वा, मुनीश की भी ईश्वरी।।
हे मात ! हमें आज, ज्ञान घुट्टी पिला दे।
भवजाल से इस, लाल को तु छुट्टी दिला दे।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महेश्वर्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

96. 'विद्यादेवी' शारदा, दो विद्या का दान।
श्रुत अमृत का पान, कर बन जाऊँ भगवान।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विद्यायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

97. 'दिव्यध्वनि' जिसको मिले पाये दिव्य स्वरूप।
दिव्य भाव से मैं नमूँ बन जाऊँ शिवभूप।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्यध्वन्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

98. मरते को करती अमर, 'माता' आप महान।
पाऊँ अमृत लोक मैं, कर ज्ञानामृत पान।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मात्रे नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

99. विद्याम्बुज पीकर करे, विद्वतगण आल्हाद।
माता आप प्रसाद से, मिटे सर्व अवसाद।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विद्वदाल्हाददायिन्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

100. सर्व कलाधर मात तू जीता काल कराल।
सर्व कला देकर भला, करती है त्रय काल।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलायै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

101. ज्ञानवती तू 'भगवती', बैठे जिसमें आन।
वो जीते मद मोह को, बन जाता भगवान।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भगवत्यै नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

102. केवल रवि आलोक से, 'दीप्त' आपका रूप।
दीप्त करो मम भाव को, पाऊँ आत्म स्वरूप॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दीप्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

103. सर्व शोक को नाशती तू है मात अशोक।
जहाँ होय तुम अर्चना, वहाँ रहे ना शोक॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वशोक प्रणाशिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

104. आप महर्षी धारणी, धरे गुरु निजशीश।
जिन पर हो तेरी कृपा, वो बनता जगदीश॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महर्षिधारिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

105. ब्रह्माणी 'पूता' तेरे तीर्थंकर से पूत।
अब तक क्यों रीता रहा, तेरा भक्त सपूत॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

106. गणाधीश अवतार से, करे जगत् उद्धार।
गणधर गुरु श्रुत शारदा, पहुँचाये भव पार॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गणाधीशावतारितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

107. आत्म ब्रह्म चिद्लोक में, जिसका थिर आवास।
उनके पावन ध्यान से, मिलता सिद्ध निवास॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मलोक स्थिरावासायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

108. द्वादश आम्नायें विमल देवी तू तद्रूप।
जो ध्याये प्रतिपल इसे वो पाये चिद्रूप॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्वादशम्नाय देवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ *(शंभु छन्द)*

जो अष्टोत्तर शत नाम तेरे, भक्ति से प्रतिदिन गाता है।
वो शास्त्र विशारद महाकवि, प्रवचन में पटुता पाता है॥

पूर्णायु यश उत्तम वैभव, धन-धान्य संपदायें पाये।
श्री ब्रह्म सूरि मुनि कहते हैं, वो मुनि श्रुत केवलि बन जाये॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गत द्वादशांगमयी सरस्वतीदेव्यै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

हेम रत्न के कलश ले करते शांतिधार।
ज्ञान सलिल उर में बहे धोये आत्म विकार॥
शांतये शांतिधारा.....।

जल भूमिज बहु रत्न के सुरभित दीप्त सरोज।
अर्पित हर्षित भाव से पायें चिन्मय योग॥
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र - **ॐ ह्रीं अर्हन्मुख कमलवासिनी पापात्म क्षयंकरी वद-वद वाग्वादिनी ऐं ह्रीं नमः स्वाहा।** या

ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः स्वाहा॥ (इस मंत्र का 9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- जिनमुख भाषित शारदा, गणधर धारे शीश।
उनकी जयमाला पढ़ूँ पाऊँ प्रज्ञाशीश॥

(शम्भु छंद)

जय-जय जिनवाणी सरस्वती, हे ज्ञान गंग श्रुत महोदधी।
जयमाल तुम्हारी गाता हूँ, तुम श्रुत देवी मैं लघु बुद्धी॥
जिनमुख से तुम अवतीर्ण हुई, औ समोशरण है महल महा।
द्वादश अंगों से कल्पित है, त्रैकालिक सुन्दर रूप अहा॥1॥

सम्यग्दर्शन का तिलक श्रेष्ठ, शुचि संयम की सुन्दर साड़ी।
रत्नत्रय के रंगीन वस्त्र, जिनको पूजे यह त्रस नाड़ी॥
द्वादश अंगों से अंग सजे, चौदह पूर्वों के आभूषण।
माँ स्याद्वाद का शस्त्र लिये, हरती जग के मिथ्यादूषण॥2॥

तुम मुकुट चन्द्र से शोभित है, जिस पर जिनदेव विराजित हैं।
सुन्दर मयूर पर कमलासन, जिस पर श्रुतदेवी राजित है॥
अनुयोग चार चऊ पाणि है, इक कर में श्री जिनवाणी है।
दूजे में अक्ष जाप माला, तीजे कर वीणा पाणि है॥3॥

चौथे कर श्रेष्ठ कमंडल है, जिसमें गर्भित भूमंडल है।
प्रज्ञा व अभय प्रदान करे, हर्षित तेरा मुख मंडल है॥
तुम पाश हरे भव पाश सदा, अंकुश कर्मों पर अंकुश है।
सब नाम तुम्हारे सार्थक हैं, जिसको ध्याकर हर मन खुश है॥4॥

भारत माता श्रुत भारती तुम, माँ सरस्वती दो सरसमती।
माँ आप शारदा ब्रह्माणी, शुभ हंसगामिनी अभयवती॥
तुम नाम विदूषा वरदा है, गौ गिर वाणी कल्याणी है।
सुकुमारी वागीश्वरी तथा, माँ ब्रह्मचारिणी ज्ञानी है॥5॥

चारित्र कलाधर कलानिधी, जगदम्ब ब्राह्मिणी श्रुतदेवी।
लघुभाषा और महाभाषा, प्रगटी तुमसे जिनमुख सेवी॥
सब युवती से अति सुन्दर तुम, जगमाता श्री जिनवाणी हो।
तुम धर्म सृष्टि का मूल स्रोत, तुम अक्षय ज्ञान प्रदानी हो॥6॥

माँ हंस तिहारा प्रज्ञा का, शुचि भेद ज्ञान दर्शाता है।
रंगीन पंख से सजा मोर, सुन्दर वाहन कहलाता है॥
श्री कल्पवृक्ष है अनेकांत, जिसमें सब अंत समाते हैं।
तेरे रत्नत्रय सरवर में, गोता मुनि हंस लगाते हैं॥7॥

हे आर्या ! जो तुमको ध्याये, श्रुत कल्प वृक्ष में रम जाये।
वो जड़धी शास्त्र विशारद हो, केवलि श्रुत केवलि पद पाये।।
इक हरिण श्रमण के आश्रम में, सुनता था प्रतिदिन जिनवाणी।
वो बालि मुनि लंकेश जयी, श्रुत सिद्ध बने केवलज्ञानी।।8।।

मरूभूति प्रज्ञा कुल मद में, नाना गतियों में भरमाये।
जब जिनश्रुत गुरु पे श्रद्धा की, सुकुमाल बने दिव सुख पाये।।
धरसेन गुरु से शिक्षित थे, श्री पुष्पदंत वा भूतबली।
जब चली लेखनी दोनों की, कलियुग में श्रुत गंगा निकली।।9।।

कौण्डेश नाम गोपालक ने, जिन मुनि को शास्त्र प्रदान किया।
वो कुन्दकुन्द आचार्य बने, बहु ग्रंथ रचे कल्याण किया।।
जिनश्रुत रक्षा में न्यौछावर, निकलंक वीर बलिदानी है।
अग्रज अकलंक महातार्किक, तुम पर अर्पित श्रद्धानी है।।10।।

गुरुवर समन्त भद्रेश्वर ने, जब पाठ रचा अति मनहारी।
तब विग्रह फोड़ा प्रगट हुए, श्री चन्द्र प्रभो अतिशयकारी।।
श्री पूज्यपाद वा नेमिचन्द्र, गुरु वीरसेन, जिनसेन हुए।
मुनि मानतुंग, श्री कुमुदचन्द्र, श्रुत लेखक गुरु रविषेण हुए।।11।।

इत्यादिक जैनाचार्य कई, श्रुत रचना में तल्लीन हुए।
जैनागम के अति गूढ़ सूत्र, ले ताड़पत्र उत्कीर्ण किये।।
भूपाल कुंवर ने श्रद्धा से, तुम नाम मंत्र का जाप किया।
बन महाकवि क्षणभर में ही, चउविंशति स्तव पाठ किया।।12।।

दक्षिण के शांति सागर ने, तालों से तुम्हें निकाला है।
जिनश्रुत प्रगटा फिर भारत में, फैलाया नव उजियाला है।।
गुरु आदि शिष्य महावीर गुरु, फिर श्रुत की महिमा फैलाये।
मुनि आर्या को बहु ग्रंथ पढ़ा, बहु शास्त्र रचे वा रचवाये।।13।।

जिनवाणी माँ के लालों में, विख्यात कुन्थुसागर गुरुवर।
बहु ग्रन्थ सृजेता महाकवि, आचार्य कनकनंदी ऋषिवर॥
जो सम्यक् श्रद्धा धर उर में, सम्यक् ग्रंथों का सृजन करें।
वो आगे अर्हत् पद पाये, शिव लक्ष्मी उसका वरण करे॥14॥

जो ज्ञान ध्यान श्रुत रचना में, अपना शुभ द्रव्य लगाते हैं।
वो नवनिधी चौदह रत्न वरें, चक्री जिनवर बन जाते हैं॥
हे मैया ! लाल तिहारा मैं, माँ मुझको प्रज्ञा से भर दो।
मुझ 'गुप्तिनंदी' को मोक्ष मिले, ऐसा पावन अक्षय वर दो॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य विद्या लाभ की, करते सुमंगल भावना।
जगदम्ब पे आस्था धरे, करते महा आराधना।
वो चन्द्र सम उज्ज्वल सुयश, अक्षुण्ण पा इस लोक में।
त्रय गुप्तिधर शिवराज वर, शाश्वत रहे शिवलोक में॥

इत्याशीर्वादः दिव्यपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सरस्वती माता की आरती

रचना : मुनि सुयशगुप्त

(तर्ज–ॐ जय महावीर प्रभो...)

ॐ जय जिनवाणी माँ, मैय्या जय जिनवाणी माँ
आरती करते सब मिल–2, पाने मुक्ति रमा॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

श्री जिनमुख से प्रकटी मैया, द्वादशांग वाणी।
सरस्वती श्रुतदेवी–2, माँ तुम ब्रह्माणी॥1॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

चार भुजायें तेरी मैय्या, बांटे सुख मेवा।
गणधर मुनि आर्याऐं–2, करते तव सेवा॥2॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

कर में अपने दीप लिये हम, नृत्य करें भारी।
सर्व अमंगल हरती–2, हो मंगलकारी॥3॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

जो तेरे गुण गाता देवी, वो शिव सुख पाता।
अल्पबुद्धि अज्ञानी–2, ज्ञानी बन जाता॥4॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

मंगल द्रव्य चढ़े तुम द्वारे, मंगल वाद्य बजे।
सोलह शृंगारों से–2, प्रतिमा रोज सजे॥5॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

शोध बोध कर बनें निरंजन, पूर्ण बोधि पायें।
श्रमण 'सुयश' भक्ति से, श्रुत–कीर्ति गाये॥6॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

आरती

रचना : मुनि चन्द्रगुप्त

(तर्ज : जय-जय जगदंबे काली..)

मैया जिनवाणी प्यारी-प्यारी, जिनवर की वाणी प्यारी।
आरतियाँ गाऊँ तेरी भारती। हो मैया....

जन्मदायिनी माता से भी बड़ी शारदा माता। बड़ी...
जन्म दिया औरों ने पर तू जन्म सुधारे माता।। जन्म...
माँ तुझको मात बनाऊँ, तेरा बेटा बन जाऊँ।। आरतियाँ...

हंसवाहिनी मयूरवाहिनी ज्ञानदायिनी माता। ज्ञान...
तीर्थंकर मुखकमल वासिनी तीर्थंकर की माता।। तीर्थंकर...
चम-चम-चम दीप जलाऊँ, छम-छम-छम नृत्य रचाऊँ।। आरतियाँ...

मयूरवाहिनी तुझे देखकर मन मयूर नाचे हैं। मन...
सा रे गा मा प ध नी सा सातों सुर बाजे हैं।। सातों...
ता थई-थई थैया-थैया, नाचूँ गाऊँ मैं मैया।। आरतियाँ...

श्री विद्या प्राप्ति विधान से, मैया विद्या देना। मैया...
'चंद्रगुप्त' को गुप्तित्रय की, सुंदर विद्या देना।। सुंदर...
मैया की छैया पाऊँ, भव की नैया तिर जाऊँ।।
आरतियाँ गाऊँ तेरी भारती हो मैया...

***

आरती नं. 2

रचना : आर्यिका आस्थाश्री

(तर्ज– मेरा मन डोले....)

जय जिनवाणी, जग कल्याणी, हम करे आरती भारती
जय सरस्वती जग मैया की...

1. अर्हंतों के मुख से प्रगटी, द्वादशांग जिनवाणी
कर में वीणा हंसवाहिनी, तू जग की कल्याणी....2 ओ मैया तू...
ऋषि मुनि ध्याये, सुर नर गाये, तू ही माँ भव से तारती
जय सरस्वती....

2. वरद हस्त हम सबके सिर रख, वरदा माँ वरदानी।
लाल तेरा अज्ञानी हूँ मैं, मुझे बनादो ज्ञानी....2 ओ मैया मुझे....
सरगम बाजे, झूमे नाचे, तू दुःख से हमें उबारती
जय सरस्वती....

3. मुख पे मेरे नाम सदा हो, सरस्वती माँ तेरा।
वाणी माँ ऐसी वाणी दो, काटूँ भव का फेरा....2 ओ मैया काटूँ....
गुप्तिसूरी, काटे दूरी, 'आस्था' भी उर में धारती....
जय सरस्वती....

***

प्रशस्ति

(शम्भु छंद)

जय चौबीसों तीर्थंकर की, जय शांतिनाथ जगदीश्वर की।
जय पंच परम परमेश्वर की, जय ऋद्धिपति सब गणधर की॥
जय तीन लोक त्रय कालों में, त्रिभुवन पूजित जिन प्रतिमा की।
जय जिनमुख वासित सरस्वती, जिनवाणी श्री जगदम्बा की॥1॥

महावीर प्रभु के शासन में, श्रुत लेखक बहु आचार्य हुए।
उनके नायक श्री कुन्दकुन्द, विख्यात जैन आचार्य हुए॥
उनका अनुचर श्री मूलसंघ, उनमें आदि सागर गुरु थे।
महावीर कीर्ति उनसे दीक्षित, बहु भाषा आगम विद गुरु थे॥2॥

उनके शिष्यों में लोक सिद्ध, कुंथुसागर गणनायक हैं।
वे ही मम मुनि दीक्षा दाता, करुणा मूर्ति सुखदायक हैं॥
उनसे दीक्षित श्री कनकनंदी, वैज्ञानिक धर्माचार्य अहा।
नंदी संघ के शिक्षा दाता, मम शिक्षा गुरु आचार्य महा॥3॥

द्वय गुरुओं की अनुकंपा से, शुभ भाव हुए श्रुत रचना के।
बहु भक्ति काव्य, पूजा विधान, श्रुत संवर्द्धन संरचना के॥
वैशाख कृष्ण दशमी बुध को, सुमुहूर्त्त महेन्द्र मनोहर था।
संवत पच्चिस सौ सैंतिस का, वीराब्द वर्ष अति सुखकर था॥4॥

कैलाश नगर दिल्ली में रच, राधेपुरी में सम्पूर्ण किया।
श्री सहसकूट में रत्नबिम्ब, तीर्थेश चन्द्र जिन बसे हिया॥
मम संघ चित्त आराध्यदेव, श्री शांतिनाथ की छाया में।
गुरु ब्रह्म सूरि कृत मंत्रों से, विद्याम्बा तुमको ध्याया है॥5॥

दोहा– जब तक रवि शशि लोक में, तब तक रहे विधान।
विद्या प्राप्ति विधान रच, भक्त बने विद्वान॥
विद्या कुल वैभव बढ़े, बने अंत भगवान।
वाक्य सिद्ध श्रुत सिद्ध बन, करे आत्म उत्थान॥

इत्याशीर्वादः

चौंसठ ऋद्धि विधान

चौंसठ ऋद्धि सम्पन्न श्री चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों की पूजा

(गीता छन्द)

चौबीस जिन के गणधरों की, आज हम अर्चा करें।
सुरभित सुमन ले साथ में, उनकी परम अर्चा करें।।
गणधर गुरु सब आईए, हममें भरें तप ज्योत्सना।
उन सम विरागी हम बने, इस हेतु यह आराधना।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

नीर भरे घट से करें, गणधर पद प्रक्षाल।
जन्मादिक त्रय रोग हर, पायें सुख त्रय काल।।
चौबीसों जिनराज के, गणधर का गुणगान।
सर्व रोग संकट हरे, करे अखिल उत्थान।।1।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुरभित गंध से, अर्चें श्री गुरु पाद।
नशें सकल संताप वा, राग–द्वेष अवसाद।। चौबीसों...।।2।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः गंधं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल धवल ले, उत्तम पुँज चढ़ाय।
गणधर कृपा रहे जहाँ, अक्षय सुख मिल जाय।। चौबीसों...।।3।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलादिक बहु सुमन लें, जपें गुरु का नाम।
आत्म ब्रह्म में लीन हो, नशें अधम खल काम॥
चौबीसों जिनराज के, गणधर का गुणगान।
सर्व रोग संकट हरे, करे अखिल उत्थान॥4॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुड़ी इमरती आदि ले, पूजें गण अधिनाथ।
क्षुधा विजय क्षण में करें, बन जायें जगनाथ॥ चौबीसों...॥5॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप आरती से करें, गणनायक गुणगान।
मोह तिमिर अज्ञान हर, पायें केवलज्ञान॥ चौबीसों...॥6॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अनल में खेयकर, पूजें गुरु पद पद्म।
आठों कर्म विनाश कर, वरें सुखद शिव सद्म॥ चौबीसों...॥7॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केलादिक बहु फल लिए, आये गणधर द्वार।
उनका शुभ आशीष ही, नाशे कर्म विकार॥ चौबीसों...॥8॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल से फल तक द्रव्य ले, मनहर अर्घ सजाय।
विघ्न विनायक को भजें, पद अनर्घ मिल जाय॥ चौबीसों...॥9॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ ऋद्धि विधान प्रारम्भ

चौंसठ ऋद्धि का करें, भविजन भव्य विधान।
पुष्पांजलि अर्पित करें, पूजें ऋद्धि महान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चौपाई आँचली बद्ध)

बुद्धि ऋद्धि के अठदस भेद, अवधिज्ञान है पहला भेद।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय।।
चौंसठ ऋद्धि धरें मुनिराज, उनको पूजें भव्य समाज।
भजो मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अवधिज्ञान बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनःपर्यय अति सूक्षमज्ञेय, इसके मूर्तिक द्रव्य प्रमेय।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय॥ चौंसठ...॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मनःपर्ययज्ञान बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब ज्ञेयों का युगपत् ज्ञान, करें मात्र इक केवलज्ञान।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय॥ चौंसठ...॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री केवलज्ञान बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संख्य शब्द के अर्थ अनंत, बीज पदों सह लिंग अनंत।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय॥ चौंसठ...॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बीज बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोष्ठ बुद्धि की महिमा भिन्न, मिश्रण बिन जाने गत खिन्न।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय॥ चौंसठ...॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक पद सुन पावें सब ज्ञान, पदानुसारिणि बुद्धि महान।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय।।
चौंसठ ऋद्धि धरें मुनिराज, उनको पूजें भव्य समाज।
भजो मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पदानुसारिणी बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभिन्न श्रोतृत्व बुद्धि महान, योगी जन का यह वरदान।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय।। चौंसठ...।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संभिन्न श्रोतृत्व बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

कायेन्द्रिय की सीमा आगे, दूरस्पर्श ऋद्धिधर लांघें।
उन मुनियों को अर्घ चढ़ायें, ऋषि पूजाकर ऋषिगुण पायें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दूरस्पर्शित्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसनेन्द्रिय का क्षेत्र अपारा, दूरास्वादी उसके पारा।
नाना रस स्वादों को जाने, ऐसे गुरु को हम श्रद्धानें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दूरास्वादित्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय का विषय विशाला, दूर घ्राण ने उसे संभाला।
दूरघ्राण ऋद्धिधर पूजें, भव-भव के अघ से हम छूटें।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दूरघ्राणत्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज दर्शन से कर्म नशाया, दूरदर्शी ऋद्धि को पाया।
ऐसे गुरु को अर्घ चढ़ायें, उन सम रत्नत्रय गुण पायें।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दूरदर्शित्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूर श्रवण ऋद्धि जब आये, असंख्य योजन पार सुनाये।
नर पशु खग[1] आदिक की वाणी, जाने ऋषिवर आतम ध्यानी।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दूरश्रवणत्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. पक्षी।

दश पूर्वित्व ऋद्धि जब आये, सब विद्यायें आ ललचायें।
पर जिन गुरु को लोभ न आवे, उनको हम सब अर्घ चढ़ावें॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दश पूर्वित्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी गुरु की सेवा पायी, चौदह पूर्व ऋद्धि विकसायी।
द्वादशांग सर्वागम जाना, उन ऋषिवर को अर्घ चढ़ाना॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्दश पूर्वित्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिष सामुद्रिक शकुनादी, जानें ऋषि जिन आगमवादी।
महा अष्टांग निमित्त के ज्ञाता, हरें भक्त की सर्व असाता॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अष्टांग महानिमित्त ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

बिन आगम अभ्यास, द्वादशांग गुरु जाने।
कर निज कर्म विनाश, चौदह पूर्व बखाने॥
प्रज्ञाश्रमण सुऋद्धि, ऐसे ऋषिवर पावें।
उनका चिन्तन मात्र, ज्ञानावरण नशावें॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रज्ञाश्रमण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन गुरु के उपदेश, क्षयोपशम तप बल से।
ऋद्धि बुद्धि प्रत्येक, परम श्रमण के विकसे॥
ऋषि इसका उपयोग, आत्मध्यान में करते।
हम इनके पद पूज, निज भव वर्तन हरते॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय शत त्रैसठ पंथ, आदि अनेक प्रवादी।
वाद कुशल मुनिराज, हरते इनकी व्याधी॥
पर मत के गुण दोष, आप निमिष में जाने।
हम इनके पद पूज, तत्त्व कुतत्त्व पिछाने॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वादित्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सूक्ष्म अणु छिद्र, उसमें श्रमण प्रविष्टे।
करें विक्रिया आप, सब भवि के मन तिष्ठे॥
अणिमा ऋद्धि महान, तप बल से ऋषि धारें।
उनको पूजें भव्य, निज भव भ्रमण निवारें॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अणिमा विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू तुल्य ऋषिकाय, महिमा ऋद्धि करावें।
विष्णु मुनीश समान, धर्म प्रभाव बढ़ावे॥
महिमा ऋद्धि महान्, तप बल से ऋषि धारें।
उनको पूजें भव्य, निज भव भ्रमण निवारें॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महिमा विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायु से लघु देह, लघिमा धर कर लेते।
करके सद्उपयोग, कर्म भार हर लेते॥
लघिमा ऋद्धि महान्, तब बल से ऋषि धारें।
उनको पूजें भव्य, निज भव भ्रमण निवारें॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लघिमा विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू तुल्य बहु भार, श्रमण करें निज तन का।
कर्म शैल[1] को चूर, रूप बढ़े आतम का॥
गरिमा ऋद्धि महान्, तप बल से ऋषि धारें।
उनको पूजें भव्य, निज भव भ्रमण निवारें॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गरिमा विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमिस्थित ऋषिराज, शशि[2] दिनकर[3] को पावें।
कर अंगुलि विस्तार, मेरु चूल[4] पर जावें॥
प्राप्ति विक्रिया ऋद्धि, तप बल से ऋषि धारें।
उनको पूजें भव्य, निज भव भ्रमण निवारें॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राप्तिविक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. पहाड़, 2. चन्द्रमा, 3. सूर्य, 4. पहाड़ की चोटी।

जल सम पृथ्वी बीच, डुबकी श्रमण लगावें।
भू सम जल के बीच, सहज गमन कर जावें॥
यह ऋद्धि प्राकाम्य, तप बल से ऋषि धारें।
उनको पूजें भव्य, निज भव भ्रमण निवारें॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राकाम्य विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग पर अमिट प्रभुत्व, गुण ईशत्व कराता।
श्रेष्ठ ऋद्धि ईशत्व, वरें श्रमण सुख दाता॥
महा ऋद्धि ईशत्व, तप बल से ऋषि धारें।
पूजा करते भव्य, निज भव भ्रमण निवारें॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ईशत्व विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वश में हो त्रयलोक, गुरु के तप गुण गावे।
कर गुरु का जयघोष, परम पुण्य उपजावे॥
ऋद्धि वशित्व महान, तप बल से ऋषि धारें।
पूजा करते भव्य, निज भव भ्रमण निवारें॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वशित्व विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र-पटल-शिल[1]-शैल, वृक्षादिक पर चलते।
छेदन प्राणविघात, किये बिना अघ टलते॥
ऋद्धि अप्रतिघात, तप बल से ऋषि धारें।
पूजा करते भव्य, निज भव भ्रमण निवारें॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अप्रतिघात विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो ऋषि अंतर्धान, धर्म प्रभाव बढ़ावें।
रह सब जग के बीच, सबको ना दिख पावें॥

---

1. चट्टान

ऋद्धि अंतर्धान, तप बल से ऋषि धारें।
पूजा करते भव्य, निज भव भ्रमण निवारें ॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अंतर्धान विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक क्षण में बहु रूप, प्रकट करे अभिरामा[1]।
अनुपम रूप निहार[2], हारे मन्मथ[3] रामा[4]॥
काम रूप शुचि ऋद्धि, तप बल से ऋषि धारें।
पूजा करते भव्य, निज भव भ्रमण निवारें ॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कामरूप विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नभ तल गामी चारण ऋद्धी, तप बल से ऋषिवर धारें।
बैठे या खड्गासन विचरें, रागद्वेष दुःख परिहारें॥
परम शुद्ध निर्ग्रन्थ श्रमण को, नभ चारण ऋद्धी होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें ॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नभस्तल गामित्व चारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में चले धरावत मुनिवर, जल जीवों का घात न हो।
जल जीवों से ऋषिवर का भी, किंचित् प्रत्याघात न हो॥
परम शुद्ध निर्ग्रन्थ श्रमण को, जल चारण ऋद्धी होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें ॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जलचारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वी से चतुरंगुल ऊपर, नभ तल में गुरु अधर चले।
जंघा पर द्वय हाथ रखे वे, निराघात निर्बाध चले॥
परम शुद्ध निर्ग्रन्थ श्रमण को, ऋद्धि जानु चारण होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें ॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जंघाचारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सुन्दर, 2. देखकर, 3. कामदेव, 4. स्त्री।

वनस्पति फल फूल पत्र पे, पदयुग धर गुरुदेव चलें।
जीव घात पर रंच न होवे, दयामूर्ति निजकर्म दलें।।
पत्र-पुष्प-फल-चारण ऋद्धि, महाश्रमण को ही होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फल-पुष्प-पत्र चारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निशिखा पर चले श्रमण जब, रंच जीव बाधा ना हो।
धूम[1]श्रेणी पर श्रमण गमन लख, जग जीवों को अचरज हो।।
अग्नि-धूम चारण यह ऋद्धि, श्रमण मात्र को ही होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्निधूम चारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघ[2]पटल पर चले श्रमण वर, जल कायिक हिंसा ना हो।
कोई नीर[3] धार पे चलते, फिर भी पूर्ण अहिंसा हो।।
मेघचरण-धारा-चारण यह, ऋद्धि श्रमण को ही होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मेघचारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मकड़जाल हल्के तंतु पर, सरल सहज गुरु गमन करें।
जिनकी निर्मल चर्या लखकर, जीव मोह का वमन करें।।
शुद्ध पुण्य निर्ग्रन्थ श्रमण को, ऋद्धि तंतु चारण होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तंतुचारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि-शशि आदिक की किरणों के, आश्रय श्री मुनिराज चलें।
उसमें रंच न जीव घात हो, जिससे वे निज कर्म दलें।
ज्योतिश्चारण ऋद्धि पुण्य से, तपनिधि श्रमणों को होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्योतिश्चारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. धुआँ, 2. बादल, 3. बारिस की धार।

मारुत्चारण वायुश्रेणि पर, सुन्दर रीत विहार करें।
रंच न वायुकायिक घाते, सर्व पाप परिहार करें।।
मारुत चारण पूत[1] ऋद्धि भी, तप निधि श्रमणों को होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मरूच्चारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुसुमलता छन्द)

सप्त भेदयुत तपऋद्धि में, पहला उग्र तपस्या जान।
व्रत उपवास आदि से भूषित, करें सर्व पापों की हान।।
ऋद्धि उग्र तपधर हम पूजें, विनशे कर्मज सर्व विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उग्रतप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु विध उपवासों के बल से, ऋद्धि दीप्त तप का हो लाभ।
निराहार बल तेज वृद्धि नित, क्षुत तृष्णा कृत नहिं संताप।।
ऋद्धि दीप्त तपधर हम पूजें, विनशे कर्मज सर्व विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दीप्ततप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप्त लोह पर नीर विलय सम, हो अहार पर नहीं निहार।
सप्त धातु भी बढ़े न जिससे, विकसे तप बल वीर्य अपार।।
ऋद्धि तप्त तपधर हम पूजें, विनशे कर्मज सर्व विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तप्ततप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणिमादिक चारण ऋद्धी युत, करते नानाविध उपवास।
चार ज्ञान के धारी होंवे, करें निरन्तर आत्म प्रवास।।
ऋद्धि महा तपधर हम पूजें, विनशे कर्मज सर्व विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महातप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. पवित्र।

उग्र-उग्र तप में तत्पर हो, धरें भयानक वन में योग।
व्याधि ग्रस्त तन से निर्मोही, करें वृक्षमूलादिक योग।।
ऋद्धि घोर तपधर हम पूजें, विनशे कर्मज सर्व विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री घोरतप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धि से लोक दहन, सागर शोषण में पूर्ण समर्थ।
परम दया धर निर्मल साधक, किन्तु न करते यह दुष्कृत्य।।
घोर पराक्रम तपधर पूजें, विनशे कर्मज सर्व विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री घोर पराक्रम तप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांत श्रमण जो समिति गुप्तिधर, पंच व्रतों का कर प्रतिपाल।
कलह रोग दुर्भिक्ष नशायें, आत्म ब्रह्म में करें विहार।।
ऋद्धि अघोर ब्रह्मचारी को, पूजें विनशे कर्म विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अघोर ब्रह्मचारित्व तप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

बल ऋद्धि के त्रय भेद हैं, उसमें प्रथम मनबल बना।
अन्तर्मुहूरत में करें सम्पूर्ण श्रुत की वाचना।।
बलऋद्धि धर ऋषिराज को पूजें यहाँ हम भाव से।
त्रय रत्न के शुभ लाभ हित हम भक्ति करते चाव से।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मनोबल ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घटिका युगल में जो श्रमण सम्पूर्ण श्रुत उच्चारते।
द्वादश जिनागम ज्ञान को निर्दोष वे आचारते।।

वचऋद्धि धर ऋषिराज को पूजें यहाँ हम भाव से।
त्रय रत्न के शुभ लाभ हित हम भक्ति करते चाव से।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वचनबल ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतु मास वा इक वर्ष तक दुर्धर विषम आसन धरें।
तन से जगत कम्पा सके किन्तु परम करुणा धरें।।
तनऋद्धि बल निर्मद वरें ऋषिवर निराकुल भाव से।
त्रय रत्न के शुभ लाभ हित हम भक्ति करते चाव से।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कायबल ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठ भेद औषधि ऋद्धि के आमर्श औषधि आदि हैं।
मुनि तन विसर्जित आम भी हरती जगत की व्याधि है।।
आमर्श औषधि ऋद्धिधर को अर्चते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आमर्शौषधि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज के तप तेज से कफ क्ष्वेल औषधि बन गये।
सर्वांग के दुःखद भयानक रोग संकट हन गये।।
श्री क्ष्वेलऔषधि ऋद्धिधर को अर्चते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन स्वेद जल्लौषध बने ऋषि की तपस्या त्याग से।
सब व्याधि दारुण नाश हो ऋषि के चरण अनुराग से।।
ऋद्धीश श्री जल्लौषधि को अर्चते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जल्लौषधि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन साधु के कर्णादि के मल औषधि बन शोभते।
आरोग्य या रोगार्त जन द्वय विध जगत को लोभते।।

मलौषधि ऋद्धीश ऋषि को अर्चते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो ।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मलौषधि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धिबल से श्रमण के मलमूत्र औषध हो गये।
जिसको लगे शुचि वायु कण भी रोग संकट नश गये।।
विड् औषधि ऋद्धीश ऋषि को अर्चते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो ।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विडौषधि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन साधु को छूकर चली वह वायु औषधि रूप हो।
ऐसे श्रमण को पूजकर भवि कामदेव स्वरूप हो।।
सर्वौषधि ऋद्धीश ऋषि को अर्चते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो ।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वौषधि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके वचन आशीष से सब द्रव्य निर्विषता धरें।
सब रोग पीड़ित जीव को वे पूर्णतम निर्विष करें।।
आशीषनिर्विष ऋद्धिधर को पूजते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो ।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुख निर्विष ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि के नयनगोचर हुए सब जीव निर्विष स्वस्थ हो।
विष युक्त मारी भी नशे सब व्याधि संकट अस्त हो।।
श्री दृष्टिनिर्विष ऋद्धिधर को पूजते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो ।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दृष्टिनिर्विष ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

आशीर्विष ऋद्धीश मरो यदि वच कहें।
साधु वचन से जीवों की आयु दहे ।।

किन्तु कभी ना ऋषि मारक वच बोलते।
उनको पूजत हम भी शिवपट खोलते॥57॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आशीर्विष ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टिविष ऋद्धीश कुपित हो देख लें।
सर्व जीव आयु तज पर भव को चलें॥
किन्तु श्रमण ना ऐसी दुर्जनता करें।
उनको पूजें हम निज आतम सुख वरें॥58॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दृष्टिविष ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण हस्तगत रुक्ष[1] विरस आहार हो।
ऋद्धि पुण्य से शीघ्र क्षीर[2]रस युक्त हो॥
इस विध क्षीरस्रावी मुनि जगख्यात हो।
हम भी उनको पूजें तप निष्णात हों॥59॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षीरस्रावी ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि की अंजलिपुट में रूखा भोज्य हो।
ऋद्धि तेज से मिष्ट मधुरतम योग्य हो॥
मधुस्रावी धर मुनि के वचन सुहावने।
उनको पूजत यह जीवन उन सम बने॥60॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मधुस्रावी ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि के करपुट में विष मिश्रित अन्न हो।
ऋद्धि तेज से वह अमृत बन धन्य हो॥
अमृतस्रावी ऋषिवच अमृत रूप हो।
उनको पूजें पायें आत्म स्वरूप को॥61॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमृतस्रावी ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. रूखा, 2. दूध।

नीरस भोजन यति के कर पुट में रखा।
सर्पिषस्रावी ने उसको घृत[1]मय भखा[2]।।
सर्पिष[3]मय श्रुतसार युक्त उनके वचन।
उनको पूजें पायें उन सम आचरण।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्पिषस्रावी ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अक्षीण महानस[4] जहाँ आहार लें।
चक्रि सैन्य व अन्य मनुज तहँ जीमलें।।
संध्या पूर्व वहाँ ना अन्नाभाव हो।
उनको पूजत नहि दुष्काल प्रभाव हो।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अक्षीण महानस ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षीणालय ऋषि के पड़ें जहाँ चरण।
तहँ निर्बाध रहें सुर चक्रि सैन्य नर।।
अल्प क्षेत्र में जीव असंख्यों तिष्ठते।
उनको पूजत हम भी शिवपुर तिष्ठते।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अक्षीण आलय ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

बुध्यादिक् चौंसठ ऋद्धीधर, मुनि तीर्थंद गणधर होते हैं।
कुछ और श्रमण सब ऋद्धी में, कुछ-कुछ ऋद्धीधर होते हैं।।
हम उनके तप गुण मन में रख, पूर्णार्घ पवित्र चढ़ाते हैं।
त्रय रत्न श्रमण सम धारण कर, शिवपथ पर कदम बढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. घी सहित, 2. खाया, 3. घी सहित, 4. अक्षय रसोई।

लघु गणधर वलय विधान

दोहा- तीर्थंकर की देशना, झेलें गणी महान्।
पुष्पांजलि उन पर करें, करते भव्य विधान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(नरेन्द्र छंद)

आदिनाथ के धर्म सूत्र को, जिनने उर में धारा।
'वृषभसेन' आदिक चौरासि, गणि को नमन हमारा॥
चौदह सौ बावन गणधर की, भक्ति आपदा नाशे।
ऋद्धि-सिद्धि वा सौख्य दिलाये, केवलज्ञान विकासे॥1॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री वृषभनाथस्य 'वृषभसेनादि' चतुरशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ के अजित त्याग को, 'सिंहसेन' गणि धारें।
उन युत नब्बे गणधर मुनिवर, क्रम से मोक्ष सिधारें॥ चौदह..॥2॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अजितनाथस्य 'सिंहसेनादि' नवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिन के सह भव नाशे, 'चारुदत्त' गण स्वामी।
इक सौ पाँच गणेश्वर जिनवर, बने परम शिवगामी॥ चौदह..॥3॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री संभवनाथस्य 'चारुदत्तादि' पंचोत्तरशतम् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन का वंदन करते, इक सौ तीन गणेशा।
गुरु 'व्रजादि' गणधर जिन को, नमते सर्व सुरेशा॥ चौदह..॥4॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अभिनंदननाथस्य 'व्रजादि' त्रयाधिक शतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ ने इक सौ सोलह, गणधर रत्न बनाये।
'तौतक' आदिक गण के नायक, तीर्थंकर गुण गायें॥ चौदह..॥5॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री सुमतिनाथस्य 'चमरादि' षोडशाधिक शतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वज्रचमर' आदिक इक सौ दस, पद्मप्रभु के चेले।
उनके गणधर बनकर वे सब, शिवरमणी संग खेलें॥
चौदह सौ बावन गणधर की, भक्ति आपदा नाशे।
ऋद्धि-सिद्धि वा सौख्य दिलाये, केवलज्ञान विकासे॥6॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पद्मनाथस्य 'वज्रचमरादि' दशाधिक शतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व के समवशरण में, 'बलदत्तादि' गणेशा।
एक शतक कम पाँच कहाये, श्रमण संघ के ईशा॥ चौदह..॥7॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री सुपार्श्वनाथस्य 'बलदत्तादि' पंचनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रनाथ हैं पूर्ण चंद्र सम, गणधर बने सितारे।
'दंतादि' त्रय नब्बे गणधर, उनके चरण पखारें॥ चौदह..॥8॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री चंद्रप्रभस्य 'दंतादि' त्रिनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत की वाणी झेलें, अट्ठयासी गुरु न्यारे।
'संघातिक' गण के अधिनायक, अपना संघ सम्हारें॥ चौदह..॥9॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पुष्पदंतस्य 'संघातिकादि' अष्टाशीतिः गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिन के 'अनगारादिक', इक्यासी गण इन्द्रा।
जिनके चरण कमल को पूजें, नर सुर इन्द्र मुनीन्द्रा॥ चौदह..॥10॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शीतलनाथस्य 'अनगारादि' एकाशीतिः गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सौधर्मादि' सतत्तर गणधर, श्री श्रेयांस जिनवर के।
चरम शरीरी गुरु मुद्रा को, भव्य जीव अवलोके॥ चौदह..॥11॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री श्रेयांसनाथस्य 'सुधर्मादि' सप्तसप्तति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु 'वरांश' ने वासुपूज्य से, रत्नत्रय वर पाया।
उन संग छ्यासठ गणधारी ने, जीवन अमर बनाया॥
चौदह सौ बावन गणधर की, भक्ति आपदा नाशे।
ऋद्धि-सिद्धि वा सौख्य दिलाये, केवलज्ञान विकासे॥12॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री वासुपूज्यस्य 'वरांशादि' षट्षष्टिः गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ की जय-जय बोलें, श्री 'जय' गणधर स्वामी।
पचपन गुरु भी प्रभु को ध्याकर, बने सुखद शिवगामी॥ चौदह..॥13॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री विमलनाथस्य 'जयादि' पंचपंचाशत गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत जिन ने भव अनंत की, अन्त्य विधि सिखलाई।
गुरु 'अरिष्टादिक' पचास ने, वही विधी अपनाई॥ चौदह..॥14॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अनन्तनाथस्य 'अरिष्टादि' पंचाशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ की धर्म ध्वजा को, धर 'अरिष्टसेनादि'।
तैंतालिस गणनायक सम्मुख, हारे परमत वादी॥ चौदह..॥15॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री धर्मनाथस्य 'अरिष्टसेनादि' त्रिचत्वारिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के धर्मचक्र को, 'चक्रायुध' गुरु धारें।
छत्तिस गणपतियों ने अपने, कर्म चक्र परिहारे॥ चौदह..॥16॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शांतिनाथस्य 'चक्रायुधादि' षट्त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुनाथ की अमृतवाणी, 'अमृतसेन' धरे हैं।
उन युत पैंतिस गणधर स्वामी, अमृत पान करें हैं॥ चौदह..॥17॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री कुंथुनाथस्य 'अमृतसेनादि' पंचत्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ की वृष श्रेणी पर, 'श्री सुषेण' ले जायें।
तीस गणीन्द्रों को नित ध्याकर, हम भी वह सुख पायें॥
चौदह सौ बावन गणधर की, भक्ति आपदा नाशे।
ऋद्धि-सिद्धि वा सौख्य दिलाये, केवलज्ञान विकासे॥18॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अरहनाथस्य 'कुंथ्वादि' त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ के शिष्य 'विशाखा', कर्म मल्ल को मारें।
अट्ठाइस गुरुओं के सम्मुख, कर्म शत्रु खुद हारे॥ चौदह..॥19॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मल्लिनाथस्य 'विशाखाचार्यादि' अष्टाविंशति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत से दिव्य महाव्रत, 'धारिण' गुरु ने धारा।
ऋद्धि प्रदाता अठदस गुरु ने, उसको ही स्वीकारा॥ चौदह..॥20॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मुनिसुव्रतनाथस्य 'धारिणादि' अष्टादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि जिनवर की धर्म सुधा को, 'सोमादि' गुरु पीते।
उसको पीकर सतरह गुरु भी, यम वैरी को जीते॥ चौदह..॥21॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री नमिनाथस्य 'सोमादि' सप्तदश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमीनाथ की धर्म धुरा को, धारें 'वरदत्तादी'।
सिद्धी विधाता ग्यारह गुरु भी, हरते आधि उपाधी॥ चौदह..॥22॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री नेमीनाथस्य 'वरदत्तादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंभवादि' पार्श्वनाथ संग, स्वयं सिद्ध पद पायें।
उन युत दस गुरु विघ्न विनायक, प्रभु को शीश नवायें॥ चौदह..॥23॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पार्श्वनाथस्य 'स्वयंभवादि' दश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'इन्द्रभूति' जिन इन्द्र युक्ति से, वीर शरण में आये।
ग्यारह गणधर परम पुण्य से, वीर वचन अपनायें।।
चौदह सौ बावन गणधर की, भक्ति आपदा नाशे।
ऋद्धि-सिद्धि वा सौख्य दिलाये, केवलज्ञान विकासे।।24।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री महावीरनाथस्य 'इन्द्रभूत्यादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

आदिनाथ से महावीर तक तीर्थंकर सुखकारी।
उनके चौदह सौ बावन हैं, गणधर ज्ञान प्रचारी।।
वृषभसेन से इन्द्रभूति तक, सब गणधर को ध्यायें।
मनहर अर्घ चढ़ाकर हम सब, रत्नत्रय गुण पायें।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां श्री वृषभसेनादि एक सहस्र चतुर्शतक द्विर्पंचाशत गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- क्षीरोदक ले कलश में, गुरु पद धारा देय।
पुष्पाञ्जलि अर्पित करें, रत्नत्रय गुण लेय।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नम: स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- ऋद्धि-सिद्धि दातार हैं, श्री गणधर भगवान।
उनकी जय गुण मालिका, करें स्वपर उत्थान।।

(शंभु छंद)

जय-जय गणधर गुणमणि आकर, तुम तीर्थंकर पथधारी हो।
चौंसठ ऋद्धी के धारक तुम, द्वादश अंगों के धारी हो।।

निज-निज तीर्थंकर जिन सम्मुख, तुमने मुनि पद को पाया है।
तप त्याग विशुद्ध भावना से, सब ऋद्धि-सिद्धि को पाया है॥1॥

पूर्वार्जित निज अति सुकृत से, तुम मुनि गण के आचार्य बने।
जिन रवि किरणों के धारक हो, गुरु सर्वोत्तम श्रमणार्य बने॥
गणधर-गणीन्द्र-गण के नायक, मुनि गणपति-विघ्न विनायक हो।
अघ रोग-शोक संकटहर्त्ता, भव्यों के भाग्य विधायक हो॥2॥

तीर्थंकर जिन की धर्मसभा, द्वादश कोठों में भाजित है।
उसमें मुनिगण के कोठे में, गणनायक नित्य विराजित हैं॥
तीर्थंकर दिव्य वचन पावन, ओंकार रूप में आते हैं।
दिनकर की किरणों के जैसे, गणधर में आन समाते हैं॥3॥

जिन वचन महोदधि गूढ़ सरस, शत इन्द्र समझ नहीं पाते हैं।
द्वादश अंगों व पूर्वों में, गणि उनको सुगम बनाते हैं॥
गणधर गुंथित जिन आगम ही, बहु प्रज्ञादीप जलाता है।
निज-निज भवांत कर भवि प्राणी, इससे रत्नत्रय पाता है॥4॥

फिर कर्म नशा गणधर स्वामी, अरिहंत सिद्ध पद पाते हैं।
तब त्रिभुवन वासी उत्सव से, अतिशायी भक्ति रचाते हैं॥
हे जिन यती ! 'गुप्तिनंदी' भी, तव गुण में ध्यान लगाता है।
शिव राज आप सम पाने को, उत्तम जयमाला गाता है॥5॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः सर्व तीर्थंकर गणधर परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

जिनभक्त निर्मल भाव से 'गणधर वलय' पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो सुर-नर उन्हें वन्दन करें॥
फिर धर क्षमादिक् धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्णकर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प्रशस्ति

(शंभु छन्द)

मैं पंच परम परमेष्ठी वा, श्री श्रुतदेवी को नमन करूँ।
गणधर वा पूर्वाचार्यों को, नित नमन करूँ अघ वमन करूँ।
इस भरत क्षेत्र में इस युग में, वृषभादि वीर तीर्थेश हुए।
उनके कुल चौदह सौ बावन, ऋद्धिधर श्रेष्ठ गणेश हुए॥1॥

महावीर प्रभु के शासन में, श्रुत लेखक बहु आचार्य हुए।
श्री भद्रबाहु, धरसेनादिक और कुन्दकुन्द आचार्य हुए॥
उनकी परम्परा अक्षयश:, महावीर कीर्ति गुरु तक आयी।
उनने बहु दीक्षायें देकर, मुनिद्रुम की शाखा फैलायी॥2॥

उनके अनुचर कुन्थुसिन्धु, मम दीक्षा गुरु आचार्य बनें।
उनसे दीक्षित श्री कनकनन्दी, मम शिक्षा गुरु आचार्य बनें॥
द्वय गुरु की दीक्षा शिक्षा ने, मेरा निश्चय उद्धार किया।
निज सम आचार्य बना गुरु ने, पुनि-पुनि मुझ पर उपकार किया॥3॥

श्री रत्नत्रय विधान वृहत्, श्री नवग्रह शांति विधान रचा।
श्री मज्जिन पंचकल्याणक शुभ, लघु गणधर वलय विधान रचा॥
श्री सर्वसिद्धी व श्रुतस्कंध, श्री विद्या प्राप्ति विधान रचे।
श्री मुनिसुव्रत विधान आदि, कई छोटे-बड़े विधान रचे॥4॥

रवि-शशि जब तक नभ में विचरे, तब तक यह श्रेष्ठ विधान रहे।
निर्विघ्न सुसंयम साधन हित, हर दीक्षुक आद्य विधान करें।
निज कर्म नाश, शिव सदन वास, बोधी समाधि का लाभ मिले।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की आस यही, जिन भक्ति में यह कलम चले॥5॥

दोहा- अल्पबुद्धि मुझको नहीं, छन्द काव्य का ज्ञान।
भक्तिभाव के वश लिखें, गुप्ति सभी विधान॥

इति अलम्

गणधर भगवान की आरती (3) *(तर्ज : नागिन...)*

रचना– ग. आर्यिका राजश्री माताजी

जय-जय बोलो आरती करलो जय गणधर वलय विधान की,
हम करें सभी मिल आरतियाँ।
श्री अरिहंत परम सुखदाई, लोकालोक प्रकाशे।
मध्य लोक में आप विराजे, कर्म घातिया नाशे। प्रभुजी कर्म...
वंदन करलो, कीर्तन करलो, ले ताल मंजीरा हाथ रे॥ हम करें.....
वृषभसेन को आदि लेकर, गौतम गणधर ज्ञानी।
द्वादश अंग निरूपण करते, परम भेद विज्ञानी। प्रभुजी परम...
भक्ति करलो, स्तुति करलो, ले वीणा मृदंग को हाथ रे॥ हम करें.....
जिनवर गणधर की आरती से, ज्ञान की ज्योति जलायें।
'राजश्री' चरणों में आकर, मोह तिमिर विनशाये। प्रभुजी मोह...
अर्चन करलो, पूजन करलो, ले झांझर ढोल विशाल रे॥ हम करें.....

आरती –5 *(तर्ज : प्यारा लागे छे गुरुराज...)*

श्री गणधर गुरुराज, आज थारी आरती ऊतारूँ।
तीर्थंकर गणनाथ, आज थारी.....॥
चौसठ ऋद्धि के हो स्वामी, दिव्यध्वनि झेले गुरु ज्ञानी।
विघ्न विनाशक नाथ, आज थारी.....॥
मुक्ति के सोपान हैं जिनवर, ऋद्धि सिद्धि दाता गुरुवर।
जोडूँ दोनों हाथ, आज थारी.....॥
तीर्थंकर के लघुनंदन का, वंदन पूजन करलो इनका।
हे गण के अधिनाथ, आज थारी.....॥
भूमंडल में मंगल करते, पाप ताप दु:ख संकट हरते।
हो गुरु दीनानाथ, आज थारी.....॥
ज्ञान सुधा का पान कराया, जिनवाणी का मान बढ़ाया।
भक्ति भाव के साथ, आज थारी.....॥
गणाधीश गणपति गणनायक, श्री गणेन्द्र ही सिद्धिदायक॥
'आस्था' झुकाये माथ, आज थारी.....॥